श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं. ८६

श्रीमद् रत्नविजय सद्गुरुभ्यो नमः

ओसवाल पोरवाल और श्रीमाल जातियोंका— सचित्र प्राचीन इतिहास.

लेखक,

मुनिश्री ज्ञानसुंदरजी.

द्रव्य सहायक,

श्रीसंघ सादडी (मारवाड) ज्ञानखाता का चंदासे.

प्रकाशक,

श्रीरत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला.

फलोदी–(मारवाड)

वीर सं० २४५४ ओसवाल सं० २३८४ वी० सं० १९८५

प्रति १०००

कीं. ०–४–०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वक्तव्य.

हालमें " जैन जाति महोदय " नामक ऐतिहासिक पुस्तक छपवाई जा रही है जिसके २९ प्रकरणों के अंदरसे यह तीसरा प्रकरण आपके करकमलोंमें उपस्थित है। इस प्रकरण के अंदर जैन महाजन संघ और उनकी शाखाँए ओसवाल–पोरवाड और श्रीमाल जातियोंका प्राचीन और प्रमाणिक इतिहास बडी ही शोधखोलके साथ संग्रह किया गया है। साधारण जनताके विशेष लाभार्थ इस प्रकरणकी १००० कोपी अलग बंधवाई गई है। अपनी जातिकी महत्वता और प्राचीनता जानने के लिए प्रत्येक जैन भाईओं को एक कोपी अपने पास अवश्य रखना चाहिए.

अगर कोई सज्जन अपने भाइओं को प्रभावना देनी चाहे वह ऐसी ऐतिहासिक किताबों की प्रभावना दे कि जिनसे अपने पूर्वजोंका गौरव, आचार, विचार, आपस का प्रेम, ऐक्यता, संगठनादि उच्च आदर्श का समाज में संचार हो सकें.

प्रुफ संशोधन आदि कारण कोई स्खलना रह गई हो तो पाठकगण क्षमा करें. इति।

प्रकाशक.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्री रत्नप्रभसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः

अथ श्री

जैन जाति महोदय.

तीसरा प्रकरण.

नत्वा इन्द्र नरेन्द्र फणीन्द्र, पूजित पाद सदा सुखदाई ।
कैवल्यज्ञान दर्शन गुणधारक, तीर्थंकर जग जोति जगाई ॥
करुणावंत कृपाके सागर, जलता नागको दीया बचाई ।
वामानंदन पार्श्वजिनेश्वर, वन्दत 'ज्ञान' सदा चितलाई

(२)

पालित पञ्चाचार अखण्डित, नौविध ब्रह्मव्रतके धारी ।
करी निकन्दन चार कषायको, कब्जे कर पंच इन्द्रियव्यारी ॥
पञ्च महाव्रत मेरु समाधर, सुमति पंच बडे उपकारी ।
गुप्ति तीन गोपि जिस गुरुको, प्रतिदिन वन्दित 'ज्ञान' आभारी।

(३)

संस्कृत दिव वाणि प्राकृत, रची पट्टावलि पूर्वधारी ।
तांको यह भाषान्तर हिन्दी, बाल जीवोंको है सुखकारी ॥
सरल भाषाको चाहत दुनियो, परिश्रम मेरा है ।हतचारी ।
ओसवंस उपकेश गच्छते, प्रगट्यो पुण्य 'ज्ञान' जयकारी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तेवीसवा तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ का पवित्र जीवन के विषयमें ॥ पार्श्वनाथ चरित्र नाम का एक स्वतंत्र ग्रन्थ प्रसिद्ध हो चुका है पार्श्वनाथ भगवान् के दश भवों सहित वर्णन कल्प सूत्र में छप चुका है पार्श्वनाथ प्रभु का संक्षिप्त जीवनी इसी किताब का दूसरा प्रकरण में हम लिख आये है भगवान् पार्श्वनाथ मोक्ष पधारने के बाद आपके शासन की शेष हिस्ट्री रह जाती है वह ही इस तीसरा प्रकरण में लिखी जाति है।

(१) भगवान् पार्श्वनाथ के पहले पाट पर आचार्य शुभदत्त हुए–भगवान् पार्श्वनाथ के मोक्ष पधार जानेपर चार प्रकारके देवों और चौसट इन्द्रोंने भगवान् का शोकयुक्त निर्वाण महोत्सव कीया तत्पश्चात् जैसे सूर्य के अस्त हो जाने से लोक में अन्धकार फेल जाता है इसी प्रकार धर्म्मनायक तीर्थंकर भगवान् के मोक्ष पधार जाने पर लौकमें अज्ञान अन्धकार छा गया सकल संघ निरूत्साही हो गये. तदन्तर चतुर्विध संघने पार्श्वनाथ भगवान् के पद पर श्री शुभदत्त नामक गणधर ' जो आठ गणधरों में सबसे बडे थे, को निर्वाचित किया, सूर्य के अस्त हो जाने पर भी चन्द्रका प्रकाश लोगों को हितकारी हुवा करता है उसी भांति भगवान् के मोक्ष पधार जाने पर आचार्य शुभदत्त सूरिजी चन्द्रवत् लौक में प्रकाश करने लगे, आचार्य श्री द्वादशांगी के पारगामि श्रुत केवली जिन नहीं पर जिन तूल्य पदार्थों को प्रकाश करते हुवे और तप संयमादि आत्मबलसे कर्म्म शत्रुओं को पराजय कर आपने कैवल्य ज्ञानदर्शन प्राप्त किया. फिर भूमण्डल पर विहार कर अनेक भव्य जीवोंका उद्धार किया

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आपश्री के पवित्र जीवन के विषय में किसी पट्टावलिकारने विशेष वर्णन न करते हुए यह ही लिखा है कि आप अपनी अन्तिमवस्था में शासन का भार आचार्य हरिदत्त सूरि के सिर पर रख आपश्री सिद्धाचलजी तीर्थपर एक मास का अनसन पूर्वक चरम श्वासोश्वास और नाशमान शरीर का त्याग कर अनंत सुखमय मोक्ष मन्दिरमे पधार गये इति पार्श्वनाथ प्रभुके प्रथम पट पर हुवे आचार्य शुभदत्तसूरि ।

(२) आचार्य शुभदत्त सूरि मोक्ष पधार जाने पर सूर्य और चन्द्र इन दोनों का प्रकाश अस्त हो जानेसे श्री संघमे बहुत रंज हुवा तत्पश्चात् आचार्य हरिदत्तसूरि को संघ नायक नियुक्त कर सकल संघ उन सूरिजी की आज्ञा को सिरोद्धारण करते हुवे आत्म कल्याण करने में तत्पर हुवे आचार्य श्री श्रुत समुद्र के पारगामी, वचन लब्धि, देशनामृत तूल्य, उपशान्त जीतेन्द्रिय यशस्वी परोपकार परायणादि अनेक गुण संयुक्त सूर्य चन्द्र के अभाव दीपक की परे उद्योत करते हुवे भूमण्डल में विहार करने लगें। दूसरी तरफ यज्ञहोम करनेवालों का भी पग पसारा विशेष रूप में होने लगा हजारो लाखो निरापराधी पशुओं का बलीदान से स्वर्ग बतलानेवालों की संख्या मे वृद्धि होने लगी परिव्राजक प्रव्रजित सन्यासी लोगोंने इसके विरूद्ध में खडे हो यज्ञ में हजारो लाखों पशुओंका बलिदान करना धर्म्म बिरूद्ध निष्ठूर कर्म्म बतला रहे थे आचार्य हरिदत्तसूरि के भी हजारो मुनि भूमण्डल पर अहिंसापरमो धर्म्म का झंडा फरका रहे थे एक समय विहार करते हुवे आचार्य श्री अपने ५०० मुनियों के परिवार से स्वस्तिनगरी के उद्यान में पधारे वहां का राजा अदीनशत्रु व नागरिक बडे ही आडम्बरसे सूरिजी को वन्दन करने को

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आये आचार्यश्रीने बडेही उच्चस्वर ओर मधुरध्वनि से धर्म-देशना दी. श्रोताजनों पर धर्मका अच्छा असर हुवा। यथा-शक्ति व्रत नियम किये तत्पश्चात् परिषदा विसर्जन हुई। जिस समय आचार्य हरिदत्तसूरि स्वस्ति नगरी के उद्यान में विराजमान थे उसी समय परिव्रजक लोहिताचार्य भी अपने शिष्य समुदायके साथ स्वस्ति नगरीके वहार ठेरे हुवे थे दोनोंके उपासकोके आपुसमें धर्मवाद होने लगा. वहांतक कि वह चर्चा राजा अदिनशत्रुकी राजसभामें भी होने लगी. पहले जमाना के राजाओं कों इन वातों का अच्छा शौख था. राजा जैनधर्मोपासक होनेपरभी किसी प्रकारका पक्षपात न करता हुवा न्यायपूर्वक एक सभा मुकरर कर ठीक टैमपर दोनों आचार्यों को आमन्त्रण किया. इसपर अपने अपने शिष्य समुदाय के परिवारसे दोनों आचार्य सभामें उपस्थित हुवे राजाने दोनो आचार्यों को वडा ही आदर सत्कार के साथ आसनपर विराजने की विनंति करी. आचार्य हरिदत्तसूरि के शिष्योंने भूमि प्रमार्जन कर एक कामलीका आसन बीचा दीया राजाकी आज्ञा ले सूरिजी विराजमान हो गये इधर लोहित्यार्य भी मृगछाला बीछा के बैठ गये तदन्तर राजाको मध्यस्थ स्थानपर रख दोनों आचार्यों के आपुस में धर्मचर्चा होने लगी विशेषता यह थी की सभाका होल चकारबद्ध भरजाने परभी शास्त्रार्थ सुनने के प्यासे लोग बडेही शान्तचित्तसे श्रवणकर रहे थे. लोहीताचार्यने अपने धर्मकी प्राचीनता के बारामें वेदोंका केइ प्रमाण दिआ और जैनधर्म के विषय में यह कहा कि जैनधर्म पार्श्वनाथजीसे चला है ईश्वरकों मानने में इन्कार करते है। इसपर हरिदत्ताचार्यने फरमाया कि जैनधर्म नूतन नहीं पर वेदोंसे भी प्राचीन है वेदोंमे भी जैनोंके प्रथम तीर्थंकर भग-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वान् ऋषभदेव व नेमिनाथ पार्श्वनाथ के नामोंका उल्लेख है (देखो वेदोंकी श्रुतियों पहला प्रकरण में) वेदान्तियोंने भी जैनतीर्थंकरोंको नमस्कार किया है राजा भरत–सागर दशरथ रामचंद्र श्रीकृष्ण कौरवपाण्डु यह सब महा पुरुष जैन ही थे जैन लोग ईश्वरको नहीं मानते यह कहना भी मिथ्या है जैसे ईश्वरका उच्चपद और श्रेष्ठता जैनोंने मानी है वैसी किसीने भी नहीं मानी है । अन्य लोगोंमें कितनेक तों ईश्वर कों जगत्का कर्त्ता मान ईश्वरपर अज्ञानता निर्दयताका कलंक लगाया है कितनकोंने सृष्टिको संहार और कितनेकोंने पुत्रीगमनादिके कलंक लगाया है जैन ईश्वरको कर्त्ता हर्ता नहीं मानते है पर सर्वज्ञ शुद्धात्मा अनंतज्ञान दर्शनमय मानते है निरंजन निराकार निर्विकार ज्योती स्वरूप सकल कर्म रहित ईश्वर पुनः पुनः अवतार धारण न करे इत्यादि वादविवाद प्रश्नोत्तर होता रहा अन्तमे लोहिताचार्य को सद्ज्ञान प्राप्त होनेसे अपने १००० साधुओं के साथ आप आचार्य हरिदत्तसूरि के पास जैन दीक्षा धारण करली इस्के साथ सेकडों हजारों लोग जो पहलेसे यज्ञकर्मसे त्रासित हुवे सूरिजीका सद्ज्ञानसे प्रतिबोध पाके जैनधर्मको स्वीकार कर लीया । क्रमशः लोहितादि मुनि आचार्य हरिदत्तसूरि के चरणकमलों में रहते हुवे जैन सिद्धान्त के पारगामी हो गये तत्पश्चात् लोहित मुनिको गणिपदसे विभूषीत कर १००० मुनियोंको साथ दे दक्षिण की तरफ विहार करवा दीया; कारण वहां भी पशुवधका बहुत प्रचार था आपश्री अहिंसा परमो धर्मका प्रचार में बडे ही विद्वान और समर्थ भी थे. आचार्य हरिदत्तसूरि चिरकाल पृथ्वीमण्डल पर विहार कर अनेक आत्माओं का उद्धार कीया आपश्री अपना अन्तिम अवस्थाका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

समय नजदीक जान अपने पदपर आर्य समुद्रसूरिको स्थापन कर आप २१ दिनका अनशन पूर्वक वैभारगिरके उपर समाधिसे नाशमान शरीरका त्याग कर स्वर्ग सिधारे। इति दूसरापाट्ट

३ आचार्य हरिदत्तसूरिके पट आर्य्य समुद्रसूरि महा प्रभाविक विद्याओं और श्रुतज्ञानके समुद्रही थे आपके शासन· कालमें भी यज्ञवादियोंका प्रचार था हजारो लाखों निरापराधि पशुओंके कोमल कण्ठपर निर्दय दैत्य छूरा चलानेमें और धर्म्मका नामसे मांस मदिराकी आचरणामें ही दुनियोंकों जालमे फसा रहे थे आचार्यश्री के विशाल संख्यामें मुनि समुदाय पूर्व बंगाळ ऊडीसा पंजाब मुलतानादि जिस २ देशमें विहार करते थे उस २ देशमे अहिंसाका खुब प्रचार कर रहे थे इधर लोहित-गणि दक्षिण करणाट तैलंग महाराष्ट्रियादि देशोंमे विहार कर अनेक राजा महाराजाओं कि राजसभामें उन पशुहिंसकों-का पराजय कर जैनधर्म्मका झंडा फरका रहेथे आपके उपासक मुनिगणकि संख्या कोचन् ५००० तक हो गइ थी. दक्षिणमें अन्योन्य मत्तके आचार्यों को देख दक्षिण जैनसंघ लोहित गणिको इसपद के योग्य समज आचार्य आर्य्यसमुद्रसूरि कि सम्मति मंगवाके अच्छा दिन शुभ मुहूर्त में लोहितगणि को आचार्य पद्विसे भूषित किये, जिससे दक्षिण विहारी मुनि-योंकी लोहित साखा और उत्तर भरतमे विहार करनेवाले मुनियोंकी निर्ग्रन्थ समुदाय के नामसे ओलखाने लगी. दोनों श्रमण समुदायोंने हाथमें धर्म्मदंड लेकर उत्तरसे दक्षिणतक जैनधर्म्मका इस कदर प्रचार कर दिया कि वेदान्तियोंका सूर्य अस्ताचल पर चलेजानेसे नाममात्र के रह गये थे.

आर्य्यसमुद्रसूरि का एक विदेशी नामका महा प्रभाविक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अतिशय ज्ञानेंद्र मुनि ५०० मुनियों के साथ विहार करता अवंति (उज्जैन) नगरी के उद्यानमें पधारे वहांका राजा जयसेन था अनंगसुन्दरी राणि तथा उसका करीबन् १० वर्षका पुत्र केशीकुमारादि और नागरिक मुनिश्रीको वन्दन करनेको आये. मुनिजीने संसार तारक दुःखनिवारक और परम वैराग्यमय देशना दी देशना श्रवणकर यथाशक्ति व्रत नियम कर परिषदा मुनिको वन्दन कर विसर्ज्जन हुई पर राजकुमर केशीकुमर पुनः पुनः मुनिश्री के सन्मुख देखता वहांही बैठा रहा फीर प्रश्न किया कि हे करूणासिन्धु ! मैं जैसे जैसे आपके सामने देखता हुँ वैसे वैसे मेरेको अत्यन्त हर्ष-रोमांचित्त हो रहा है वैसा पूर्वमें कबी किसी कार्य में न हुवा था इतना ही नहीं पर आप पर मेरा इतना धर्म्म प्रेम हो गया है कि जिस्कों में जबानसे कहनेमें भी असमर्थ हुं ।

मुनिश्रीने अपना दिव्यज्ञान द्वारा कुमर का पूर्व भव देखके कहा कि हे राजकुमर । तुमने पूर्वभवमें इस जिनेन्द्र दीक्षा का पालन कीया है वास्ते तुमको मुनिवेष पर राग हो रहा है । कुमरने कहा क्या भगवान् ! सचही मेरा जीवने पूर्वभव में जैन दीक्षा का सेवन कीया है ? इसपर मुनिने कहा कि हे राजकुमार । सुन इस भारत वर्ष के धनपुर नगरका पृथ्वीधर राजा की सौभाग्यदेविके सात पुत्रियों पर देवदत्त नामका कुमार हुवा था. वह बाल्यावस्थामें ही गुणभूषणाचार्य पास दीक्षा ले चिरकाल दीक्षापाल अन्तमें सामाधिपूर्वक काल-कर पंचवा ब्रह्मस्वर्गमें देव हुवा वहांसे चव कर तुं राजा का पुत्र केशी कुमार हुवा है यह सुन कुमर को उहापोह करतों ही जातिस्मरण ज्ञानोत्पन्न हुवा जिससे मुनिने कहा था वह आप प्रत्यक्ष ज्ञान के जरिये सब आबेहुब देखने लग गया बस फिर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्या था ! ज्ञानियों के लिये सांसारिक राजसंपदा सब कारा-घर सदृश ही है कुमर तो परम वैराग्य भावको प्राप्त हो मुनिको वन्दन कर अपने मकानपर आया मातापितासे दीक्षा की रजा मांगी पर १० वर्षका बालक दीक्षामें क्यां समजे एसा समज मातापिताने एक किस्म की हांसी समजली पर जब कुमर-का मुखसे ज्ञानमय वैराग्यरस रंगमे रंगित शब्द सुना तब माता-पिता खुद हो संसारको असार जान बडा पुत्रके राज दे आप अपने प्यारा पुत्र केशीकुमार कों साथ ले विदेशी मुनिके पास बडे आ-डम्बर के साथ जैन दीक्षा धारण कर ली. जयसेन राजर्षि और अनंगसुन्दरी आर्यिका ज्ञान ध्यान तप संयमसे आत्म कल्यान कार्य्यमें प्रवृतमान हुए। केशीकुमर श्रमण जातिस्मरण ज्ञानसे पूर्व पढा हुवा ज्ञानका अध्ययन करते ही तथा विशेषमें ज्ञाना-भ्यास करता हुवा स्वल्प समयमें श्रुत समुद्र का पारगामी हो गया। आचार्य आर्य्यसमुद्रसूरि अपने जीवन कालमें शासन की अच्छी सेवा करी थी धर्मप्रचार और शिष्य समुदायमें भी वृद्धि करी थी अपनि अन्तिमावस्था जान केशीश्रमण कों अपने पद पर नियुक्तकर आपश्री सिद्धक्षेत्रपर सलेखनां करता हुवा १५ दिनोंका अनसन पूर्वक स्वर्गगमन कीया. इति तीसरा पाट.

(४) आचार्य आर्य्यसमुद्रसूरि के पट पर आर्य्यकेशीश्रम-णाचार्य बालब्रह्मचारी अनेक विद्याओं के ज्ञाता देव देवियोंसे पूजित अपने निर्मल ज्ञानरूपी सूर्य प्रकाशसे भव्यों के मिथ्या-त्वरुप अंधकार को नाश करते हुवे भूमण्डलपर विहार करने लगें इधर दक्षिणविहारी लौहित्याचार्य के स्वर्गवास हो जाने के बाद मुनि वर्गमें शिथिलता वा आपसमे कूट पड जानेसे अन्य लोगोंका जोर बढ जाना स्वाभाविक बात है मतमतान्तरों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के वादविवादमें आत्मशक्तियोंका दुरुपयोग होने लगा. यज्ञ कर्म और पशु हिंसकों का फिर जोर बढने लगा धार्मिक और सामाजिक श्रृंखलनायेंमें भी परावर्तन होने लगा.

यह सब हाल उत्तर भरतमें रहे हुवे केशीश्रमणाचार्यने सुना तब दक्षिण भरतमें विहारकरनेवाले मुनियोंको अपने पास बुलवा लिया अथपि कितनेक मुनि रह भी गये थे. दक्षिणविहारी मुनि उत्तरमें आने पर कुच्छ अरसा के बाद वहां भी वह ही हालत हुई कि जो दक्षिणमे थी। इधर आचार्यश्री घर की बिगडी सुधारने में लग रहे थे उधर पशुहिंसक यज्ञवादीयोंने अपना जोर को बढानेमें प्रयत्नशील बन यज्ञका प्रचार करने लगे. घरकी फूटका यह परिणाम हुवा कि एक पिहित मुनिका शिष्य जिस्का नाम बुद्धकीर्ति था उसने समुदायसे अपमानीत हो जैन धर्म्मसे पतित हो अपना बौद्ध नामसे बौद्ध[1] धर्म्म का प्रचार करना शरु किया। बुद्ध कीर्तिने अपने धर्म्म के नियम एसे सिधे और सरल रखे कि हरेक साधारण मनुष्य भी उसे पाल सके बन्धन तो वह किसी प्रकारका

---

१ जैन श्वेताम्बर आम्नाय के आचारांग सूत्र कि टीकामें बुद्ध धर्म्म का प्रवर्तक मुल पुरुष बुद्धकीर्ति पार्श्वनाथ तीर्थ में एक साधु था जिसने बोद्ध धर्म्म चलाया.

२ दिगम्बर आम्नायका दर्शनसार नामका ग्रन्थमें लिखा है कि पार्श्वनाथ के तीर्थ में पिहित मुनिका शिष्य बुद्धकीर्ति साधु जैन धर्म्म से पतित हो मांस मद्दि आचारण करता हुवा अपना नामसे बोद्ध धर्म्म चलाया है.

३ बोद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि बुद्ध एक राजा शुद्धोदीत का पुत्र था वह तापसों के पास दीक्षा लीथी बोधि होनेके बाद अहिंसा धर्म्म का खुब प्रचार कीया था इसका समय भगवान् महावीर के समकालिन माना जाता है कुच्छ भी हो. बुद्धने जैनोंसे अहिंसा धर्म्म की शिक्षा जरुर पाई थी.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

था ही नहीं यहां तक कि मरे हुवे जीवोंका मांस व मदिरा खाना पीना भी निषेध नहीं था. बुद्धने सबसे पहला यज्ञ कर्मके विरूद्ध में खडा हो उपदेश करना शरू कीया जिस्का फल यह हुवा की पहलेसे ही इस निष्ठुर कार्य्य से लोगों में त्राहि त्राहि मच रही थी जैन धर्म्म के नियम एसे सख्त थे कि वह संसार लुब्ध जीवोंको पालन करना मुश्किल था रुची होने पर भी वह नियम पालन करनेमे असमर्थ जनता एकदम बुद्ध के झंडे के निचे आ गई यहां तक की केइ राजा महाराजा भी यज्ञादि कर्मसे विरक्त हो बोद्ध धर्म्म को स्वीकार कर लीया. इधर बौद्धोंका जोर बढता देख आचार्य केशीश्रमणने अपना श्रमण संघकी एक विराट् सभा भर उनकों सचोट उपदेश कर आपुसकी फूट को देशनिकाल कर जों शिथिलता फैली हुई थी उसे दूर कर अन्यान्य देशमें विहार करनेकी आज्ञा दी मुनिवर्ग में भी आचार्यश्रीके उपदेशका एसा प्रभाव हुवा कि वह अपने कर्त्तव्य पर कम्मर कस तैयार हो गये । आचार्यश्रीने निम्न लिखित आज्ञा एं फरमाई ।

५०० मुनियोंके साथ वैकूटाचार्य करणाटक तैलंगादिकी तरफ
५०० मुनियोंके साथ कालिकापुत्राचार्य दक्षिण महाराष्ट्रिय देशकी तरफ
५०० मुनियोंके साथ गर्गाचार्य सिन्धु-सौवीर देशकी तरफ
५०० मुनियोंके साथ जयाचार्य काशी कोशल देशके तरफ
५०० मुनियोंके साथ अर्हन्नाचार्य अंगबंग देशकी तरफ
५०० मुनियोंके साथ काश्यपाचार्य संयुक्त प्रान्तकी तरफ
५०० शिवाचार्य अवंति देशकी तरफ

इनके सिवाय थोडा थोडी संख्यामें भी अन्योअन्य प्रान्तोंमें

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनियोका विहार करवा के आप एक हजार मुनियोंके साथ मागध देशमें विहार कर पशुबलि करनेवाले यज्ञ और मांसभक्षण करनेवाले बोद्धों के सामने खडे हो गये.

आपश्री के परम पुरुषार्थ का यह फल हुवा कि राजा चेटक-सतानिक दधिवाहन सिद्धार्थ-विजयसेन चन्द्रपाल अदिनशत्रु प्रसन्नजीत और राजा प्रदेशी आदि अनेक राजा महाराजाओं और लाखो मनुष्यों को पतित दशासे उद्धार कर पवित्र जैनधर्म्म के उपासक बना दीये थे.

आजकल इतिहास शोधखोल से पता मिलता है कि वह जमाना बडा हि विकट था आपुस के धर्म्म वाद के लिये स्थान स्थानपर मोरचा बन्धी हो रही थी। आत्मकल्यान करने कि जो आत्म शक्तियोंथी उनका दुरुपयोग वाद-विवाद में होता था अज्ञानताका का साम्राज्य था जनता में बडा भारी कोलाहल मच रहा था इत्यादि कुदरत एक एसा महा पुरुष की प्रतीक्षा कर रही थी कि जिसकी परमावश्यक्ता थी—

इसी समय में जगदुद्धारक त्रीलोकी नाथ शान्तिका समुद्र चरमतीर्थंकर भगवान महावीर प्रभुने अवतार धारण कीया संक्षिप्त में-क्षत्रीकुण्ड नगर का राजा सिद्धार्थ कि त्रिशलादे राणि की पवित्र रत्न कुक्षी में भगवान् महावीरने अवतार लीया। जन्म समय छप्पन दिग्कुमारीकाओंने सूतिका कर्म्म किया सौधर्म्मादि चौसठ इन्द्रोंने सुमेरूगिरिपर भगवान का जन्म महोत्सव किया. भगवान् ३० वर्ष गृहवास में रहें एक पुत्री हुई वह जमालि क्षत्री कुमारको व्याही थी अन्तमें गृहा वस्थामें एक वर्ष तक वर्षीदान दीया तत्पश्चात् इन्द्रनेरेन्द्रों के महोत्सवपूर्वक आपने दीक्षा धारण करी १२॥ वर्ष घोर तप-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

श्चर्या करते हुवे देव मनुष्य तीर्यंचादिके अनेकानेक उपसर्ग परिसहों को सहन कर पूर्व संचित दुष्ट कर्मोका क्षय कर कैवल्यज्ञान दर्शन को प्राप्त कर लीया आप सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर परमब्रह्म लोकालोक के चराचर पदार्थों का भाव एक ही समय मे देखने जानने लगे पूर्व तीर्थंकरों के शासन के संघ कि शिथलता कों दूर कर पहले के नियमोसे आप एसे सख्ताइ के नियम रखे कि फिरसे श्रमणसंघ में शिथिलता का संचार होने न पावे भगवान् महावीरने बडे ही बुलंद अवाज से 'अहिंसा परमोधर्मः' का प्रचार करना प्रारंभ कीया शान्ति रूपी एसा जल बरसाया कि दग्ध भूमिरूप जनता में एक-दम शान्ति पसर गई। धार्मिक सामाजिक नैतिक त्रुटि हुई शृंखला फिर अपने स्थानपर पहुंच गई आजके ऐतिहासिक विद्वानोंका मत है कि भगवान् महावीर के झंडा निचे राजा महाराजा और चालीश क्रोड जनता शान्तिरसका अस्वादन कर रही थी केशीश्रमणादि पार्श्वनाथ संतानियें भी प्राय: सब भगवान् महावीरके शासन को स्वीकार कर अपना कल्यान करने लगे पर पार्श्वनाथके संतानिये थे वह पार्श्वनाथके नामसे ही विख्यात रहे। आजपर्यन्त भी पार्श्वनाथ भगवान् की संतान परम्परासे अविच्छन चली आ रही है। भगवान् महावीरका पवित्र जीवन के लिये पूर्वीय और पाश्चात्य विद्वान सब एक ही अवाजसे स्वीकार करते है कि महावीर भगवान् एक जगत् उद्धारक ऐतिहासिक महापुरुष हो गये है जगत्मे अहिंसा का झंडा महावीरने ही फरकाया है वेदान्तियों कि यज्ञप्रवृति पशुहिंसाने रोकी है तो एक महावीरने ही रोकी है जनताका कल्याण के लिये महावीरप्रभुका जीवन एक धेयरूप है इत्यादि महावीर भगवान् के जीवन विस्तार मुद्रित हो गया है वास्ते में मेरे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उद्देश्यानुसार यहाँ महावीर भगवान् का संबन्ध यहीं समाप्तकर आगे जैनजाति के बारामे ही मेरा लेख प्रारंभ करता हुँ

भगवान् केशीश्रमणाचार्यने जैनधर्म्म कों अच्छी तरक्की दी अन्तिमावस्थ में आप अपने पाट पर स्वयंप्रभ नामके मुनिकों स्थापनकर एक मासका अनशन पूर्वक सम्मेतशिखर गिरिपर स्वर्ग को प्रस्थान कीया इति पार्श्वनाथ भगवान् का चतुर्थ पाट हुवा।

(५) केशीश्रमणाचार्य के पट्ट उदयाचल पर सूर्य के समान प्रकाश करनेवाले आचार्य स्वयंप्रभसूरि हुए आपका जन्म विद्याधर कुलमें हुवाथा. आप अनेक विद्याओं के पारगामी थे स्वपरमत के शास्त्रों में निपुण थे आपके आज्ञावर्त्ति हजारों मुनि भूमण्डल पर विहार कर धर्म्म प्रचार के साथ जनताका उद्धार कर रहेथे इधर भगवान् वीरप्रभुकी सन्तान भी कम संख्यामें नहीं थी भगवान् महावीर का झंडेली उपदेशसे ब्राह्मणोका जोर और यज्ञकर्म्म प्राय: नष्ट हो गया था तथापि मरूस्थल जैसे रेतीले देशमें न तो जैन पहुँच सके थे और न बौद्ध भी यहां आस के थे वास्ते यहां बाममार्गियो का बडा भारी जोरशोर था. यज्ञ होम और भी वडे वडे अत्याचार हो रहे थे धर्म्म के नामपर दुराचार व्यभिचार का भी पोषण हो रहा था कुण्डापन्थ का चलीयापंथ यह बाममार्गियों की शाखाएं थी देवीशक्ता के वह उपासक थे इस देशके राजा प्रजा प्राय: सब इसी पन्थके उपासक थे उस समय मारवाड मे श्रीमालनामक नगर उन बाममार्गियोंका केन्द्रस्थान गीना जाता था.

आचार्य स्वयंप्रभसूरि के उपासक जैसे खेचर भूचर मनुष्य विद्याधर थे वैसे ही देवि देवता भी थे वह भी समय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पाकर व्याख्यान श्रवण करने कों आये करते थे-एक समय आचार्य श्री संघ के साथ सिद्धाचलजी की यात्राकर अर्बुदाचलकी यात्रा करनेको आये थे वहांपर व्यापार निमित्त आये हुवे श्रीमालनगर के कितनेक शेठ शाहुकार सूरिजी की अहिंसामय देशना श्रवण कर विनंति करी कि हे भगवान् ! हमारें वहां तो प्रत्येक वर्ष में हजारो लाखो पशुओंका यज्ञमें बलिदान हो रहा है और उसमेंही जनता की शान्ति और धर्म्म माना जाता है आज आपका उपदेश श्रवण करनेसे तो यह ज्ञात हुवा है कि यह एक नरकका ही द्वार है अगर आप जैसे परोपकारी महात्माओंका पधारना हमारे जैसे क्षेत्रमें हो तों वहां की भद्रिक जनता आप के उपदेशका अवश्य लाभ उठावे इत्यादि विनंति करनेपर सूरिजीने उसे सहर्ष स्वीकार कर ली जैसे चितसारथी की विनंति को केशी-श्रमणने स्वीकार करी थी। समय पाके सूरिजी क्रमशः विहार कर श्रीमालनगर के उद्यानमें पधार गये जिन्होंने अर्बुदाचल पर विनंति करी थी वह सज्जन अपने मित्रोंके साथ सूरिजी की सेवा उपासना करनेमे तत्पर हो सब तरहकी अनुकूलता करदी उसी दिनोंमें श्रीमालनगरमें एक अश्वमेघ नामका यज्ञ की तयारी हो रही थी देशविदेश के हजारों ब्राह्मणाभास एकत्र हुवे इधर हजारों लाखो निरापराधि पशुओंको एकत्र कीये है एक बडा भारी यज्ञ मण्डप रचा गया था घर घरमें बकारा भैंसा बन्धा हुवा है कि उनका यज्ञमें बलिदान कर शान्ति मनावेंगे इत्यादि। इधर सूरिजी के शिष्य नगरमें भिक्षा को गये नगरका हाल देख वापिस आ गये। सूरिजी को अर्ज करी कि हे भगवान् ! यह नगर साधुओं को भिक्षा लेने लायक नहीं है सब हाल सुनाया सूरिजी अपने कितनेक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विद्वान शिष्यों को साथ ले सिधे ही राज सभामें गये जहां पर यज्ञ सम्बंधि सब तैयारीयां और सलावों हो रही और बडे बडे झटाधारी सिरपर त्रिपुंड्र भस्म लगाये हुवे गलेमें जीनोउके तागे पडे हुवे मांस लुब्धक ब्राह्मणाभास बेठे थे आचार्यश्रीका अतिशय तप तेज इतना तो प्रभावशाली था कि सूरिजीका आते हुवे देखतें ही राजा जयसेन आसनसे उठ खडा हुवा कुच्छ सामने आके नमस्कार किया सूरिजीने "धर्म्म लाभ" दीया उसपर वहां बेठे हुवे ब्राह्मण लोग हंसने लगे. राजाने पहिले कभी धर्म्मलाभ शब्द कानोंसे सुनाही नहीं था वास्ते सूरिजी से पूच्छा कि हे प्रभो ! यह धर्म्मलाभ क्या वस्तु है क्या आप आशीर्वाद नहीं देते हो जैसे हमारे गुरु ब्राह्मण लोग दीया करते है । इसपर सूरजीने कहाः—

... ...

हे राजन् कितनेक लोग दीर्घायुष्य (चिरंजीवो) का आशीर्वाद देते है पर दीर्घायुष्य नरकमें भी होते है कितनेक बहु पुत्र का आशीर्वाद देते है वह कुकर कुर्कटादिके भी बहु पुत्र होते है परं जैनमुनियोंका धर्म्मलाभ तुमारा सर्व सुख अर्थात् इस परलोकमें तुमारा कल्याण के लिये है यह विद्वत्तामय शब्द सुन राजाको अतिशय आनंद हुवा राजाने सूरीजीका आदर सत्कार कर आसनपर विराजने कि अर्ज करी सूरिजी अपनी काम्बली विचाके विराज गये. उस समय के राजा लोगों को धर्म्म श्रवण करने का प्रेम था. राजाने नम्रता पूर्वक सूरिजीसे अर्ज करी कि हे भगवान् ! धर्म्मका क्या लक्षण है किस धर्म्म से जीव जन्म मरण के दुःखोसे निवृति पाता है ? सूरिजीने समय पाके कहा किः—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अहिंसा सर्व जीवेषु, तत्वज्ञैः परिभाषितम् ।
इदं हि मूल धर्म्मस्य, शेषस्तस्यैव विस्तरम् ॥ १ ॥

हे नरेश ! इस आरापार संसार के अन्दर जीतने तत्ववेत्ता अवतारिक पुरुष हो गये है उन सर्वोने धर्म्मका लक्षण "अहिंसा परमो धर्म्मः" बतलाया है शेष सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य निस्पृहीता आदि उस मूलकी शाखा प्रतिशाखारुप विस्तार है फिर भी महाभारतमें श्री कृष्णचन्द्रने भी युधिष्ठर से कहा है कि:—

यो दद्यात् कांचनं मेरुः कृत्स्नां चैव वसुंधरा: ।
एकस्य जीवितं दद्यात् न च तुल्य युधिष्ठिर ॥

हे धराधिप ! एक जीवके जिवित दान के तुल्य कांचनका मेरु और संपूर्ण पृथ्वीका दान भी नहीं आसक्ता है । हे राजन् ! जैसा अपना जिवित अपने कों प्रीय है वैसे ही सब जीव अपने जिवित कों प्रीय समजते है पर मांस लोंलुप कितने ही अज्ञानी पापात्माओंने बिचारे निरपराधि पशुओंका बलिदान देनेमें भी धर्म्ममान दुनियाको नरक के रहस्ते पर पहुंचा देनेका पाखण्ड मचा रखा है यद्यपि कितनेक देशमे तो सत्य वक्ताओंके प्रभावशालि उपदेशसे दुनियोंमें ज्ञानका प्रकाश होनेसे वह निष्ठूर कर्म्म नष्ट हो गया है पर केइ केइ देशोंमें अज्ञात लोग इस कुप्रथाके कीचडमे फंसे पडे है, यह सुनते ही वह निर्दय दैत्य मांस लुपी यज्ञाध्यक्षक बोल उठे कि महाराज ! यह जैन लोग नास्तिक है वेद और ईश्वर को नहीं मानते है दया दया पुकार के सनातन यज्ञ धर्म्मका निषेध करते फीरते है इनको क्या खबर है कि वेदोंमें यज्ञ करना महान् धर्म्म और दुनियोंकी शान्ति बतलाइ है । देखिये शास्त्रोंमें क्या कहा है ?

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयं भुवाः ।
यज्ञोस्य भुत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥

भावार्थ—ईश्वरने यज्ञ के लिये ही सृष्टिमें पशुओ को पैदा कीया है जो यज्ञ के अन्दर पशुओ कि बलि दी जाति है वह सब पशु योनिका दुःखोसे मुक्त हो सिधे ही स्वर्गमे चले जाते है और यज्ञ करनेसे राजा प्रजामे शान्ति रहती है.

सूरिजीने कहा अरे मिथ्यावादीयों तुम स्वल्पसा स्वार्थ (मांस भक्षण) के लिये दुनियों को मिथ्या उपदेश दे दुर्गति के पात्र क्यों बनते हो अगर यज्ञमे बलिदान करनेसे ही स्वर्ग जाते है तो

" निहतस्य पशोर्यज्ञे । स्वर्ग प्राप्तिर्यदीष्य ते ।
स्वपिता यजमानेन । किन्तु तस्मान्न हन्यते ॥ "

भावार्थ—अगर स्वर्गमे पहुंचाने के हेतु हि पशुओंको यज्ञमें मारते हो तो तुमारे पिता बन्धु पुत्र स्त्रिको स्वर्ग क्यो नहीं पहुंचाते हों अथवा यजमान को बलि के जरिये स्वर्ग क्यों नहीं भेजते हो अरे पाखण्डियों अगर एसे ही स्वर्ग मीलती है तो फीर क्या तुमको स्वर्ग के सुख प्रीय नहीं है देखिये शास्त्र क्या कहता है.

" यूपं कत्वा पशुन् हत्वा । कृत्वा रूधिर कर्दमम् ।
यद्येव गम्यते स्वर्गे । नरके केन गम्यते ॥ "

---

*बिचारा पशु उन निर्दय दैत्यों प्रति पुकार करते है कि

" नाहं स्वर्ग फलोपभोग तुष्टितो नाभ्यार्थि तस्त्वंकाया, ।
संतुष्ठ स्तृण भक्षणेन सततं साधो न युक्त तव ॥
स्वर्गं यान्ति यदत्वया विनिहिता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो ।
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवै ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अगर पशुओ के मारनेसे रुधिरका कर्दम करनेसे ही स्वर्ग को चला जावेगा तब फिर नरक कौन जावेगा । हे राजन् एसा मिथ्या उपदेश देनेवाले गुरु और दयाहिना धर्म्म को दूरसे ही त्याग देना चाहिये कहा है कीः—

" त्यजद्धर्मं दयाहीनं क्रियाहीनं गुरु स्त्यजेत् "

हे राजन् ! आप पवित्र क्षत्री कुलमें उत्पन्न हुवे है पर क्षत्रि धर्म्मसे अभी अज्ञात है देखिये क्षत्रीयोंका क्या धर्म्म है

" वैरिणोऽपि हि मुच्यन्ते, प्राणान्ते तृण भक्षणम् ।
तृणाहारा सदैवैते हन्यन्ते पशवाकथम् ॥ "

भावार्थ कट्टर शत्रु प्राणान्त समय मुहमे तृण लेनेपर क्षत्री उसको छोड देते है तो सदैव तृण भक्षण करनेवाले निरपराधि पशुओंको मारना क्या आप जेसोको उचित है आपको पृथ्वीपर जनता न्यायाधिश मानते है तो एसे अबोले जानवारो पर आप के राजत्व कालमे एसा अन्याय होना क्या उचित है अर्थात् एसा हिंसामय मिथ्या पंथका त्यागकर इन पशुओंको जीवितदान दे इन गरीब अनाथ जीवोंकी आशीर्वाद लो और अनंत पुन्योपार्जन करो यह धर्म्म आप के इस लोक परलोकमे हित सुख और कल्याण का कारण होगा । हिंसा धर्मि उन यज्ञ कर्म करनेवालोने हिंसाकी पुष्टिमे बहुत दलिलों करी परंतु सूरिजीने शास्त्र या युक्तियो द्वारा उन कुतर्कों का एसा प्रतिकार किया कि जिस्कों श्रवणकर राजा और राजसभा तथा नागरिक लोगोंको उन निष्ठुर यज्ञपर घृणा आने लगी और आचार्यश्री के फरमाये हुवे सत्य धर्म्म की रुची बढ गई राजा जयसेनने एकदम हुकम दे दीया कि सब पशुओंको छोडदो यज्ञ मण्डप को तोड फोड डालों और मेरा राजमें यह हुकम जाहिर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

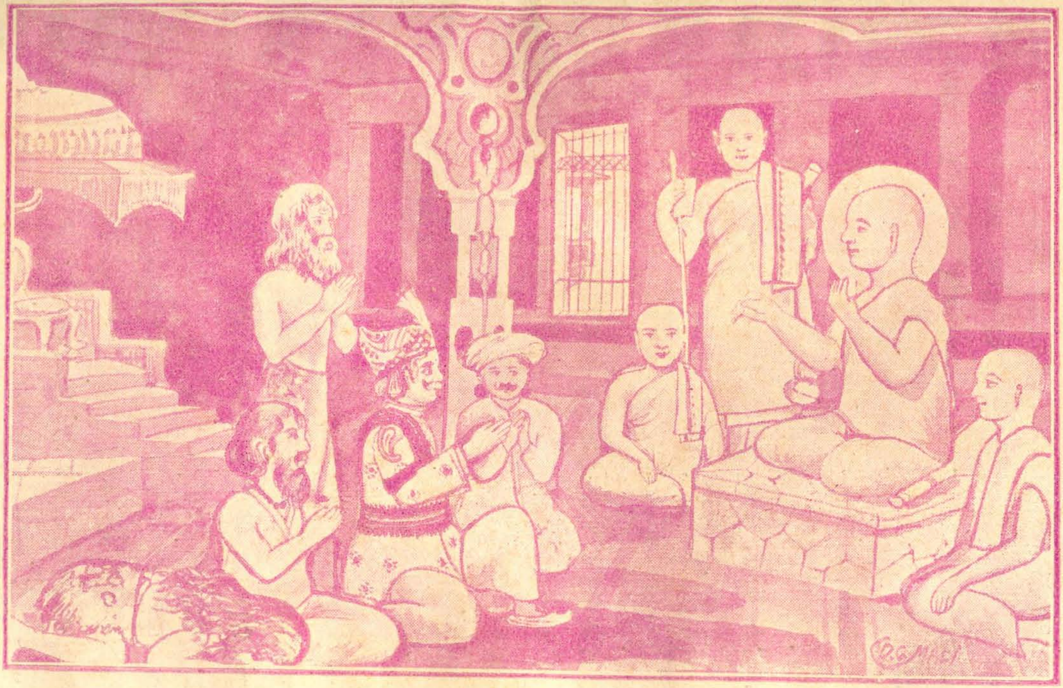

श्रीमाल नगरकि राजसभामें, श्रीस्वयंप्रभसूरिजीनें, महाराजा जयसेनको फरमायाकि "हे राजन्! यह घोर हिंसामय धर्मको छोड कर 'अहिंसा परमो धर्मः' समझकर उसको स्वीकार करो ? इसपर राजानें असंख्य मनुष्योंके साथ जैन धर्म अंगीकार किया। (पृ १८)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करदों कि कोइ भी शक्स कीसी प्राणिको मारेगा उसे प्राणि के बदले अपना प्राण देना पडेंगा. राजा अहिंसा भगवती का परमोपासक बन गया । फिर आचार्यश्रीने जैनधर्म्म का स्वरुप मुनि या श्रावक धर्म्म का वर्णन कर विस्तारपूर्वक सुनाया फल यह हुवा की वहांपर ९०००० घरों वालोने जैन धर्म्म को स्वीकार कर आचार्यश्री के चरणोपासक बन गये. आगे चलकर इस श्रीमालनगर के जैन लोग अन्योन्य नगरमें निवास कीया तब नगर का नामसे इन जैनो की श्रीमाल जाति प्रसिद्ध हुई*

श्रीमालनगरके लोगोंने सूरिजीसे अर्ज करी कि हे करुणा-सिन्धु। आप के यहां पधारनेसे हजारो लाखो पशुओं को अभयदान मीला और क्रूर कर्म्मरूपि मिथ्यामत्त सेवन कर नरकमे जाने वालें जीवो को सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति हुई स्वर्ग मोक्ष का रहस्ता मीला अर्हन्त धर्म्म की बडी भारी प्रभावना हुई आप का परमोपकार का बदला इस भवमें तो क्या पर भवो भवमें देना हमारे लिये अशक्य है आपकी सेवा उपासना क्षणभर भी छोडनी नहीं चाहते है तद्यपि एक अरज करना हम बहुत जरूरी समजते है वह यह है की आबु के पास पद्मावती नामकी नगरी है वहां का राजा पद्मसेनने भी देवी के उपद्रव को शान्ति करने के हेतु अश्व-मेघ यज्ञ का प्रारंभ कीया है कल पूर्णिमा का वह यज्ञ है अगर यहां पर आप श्रीमानों के पधारना हो जाय तो जैसा यहां लाभ हुवा है वैसा ही वहां भी उपकार है । सूरिजीने इस बात को सहर्ष स्वीकार करलि और संघ को कह दीया की हम कलशुभे ही पद्मावती पहुंच जावेंगे. गृहस्थ लोगोंने

* देखो नोट नम्बर १.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शीघ्रगामनी शांढणी की सवारी कर पद्मावती की तरफ रवाना हो गये सूरिजी महाराज सवेरे अपनि मुनि क्रिया से निवृति पाते ही विद्याबल से एक मुहुर्तमात्रमें पद्मावती पहुंच गये सिधे ही राजसभा में गये इतने में श्रीमाल नगर के श्राद्धवर्ग भी वहां पहुंच गये श्रीमाल की बात सब नगर में फेल गई–राज सभा चिकारबद्ध भरा गई सूरिजीने तो वह ही ' अहिंसा परमो धर्म्मः ' पर विवेचन कर व्याख्यान दीया इस पर ब्राह्मणभासोने कहा महात्माजी यहां श्रीमाल नगर नहीं है कि आप का उपदेश श्रवण कर स्वर्ग–मोक्ष की प्राप्ति वाला यज्ञ करना छोड दे ? सूरिजीने कहा महानुभावों न तो में श्रीमाल नगरसे पोट बन्ध लाया हुं न मेरे को यहांसे कुच्छ ले जाना है में तो रहस्ता भुला हुवा को सद् रहस्ता बतला रहा हुं और सदुपदेशद्वारा जनताका कल्याण करना मेरा कर्त्तव्य समझता हुं जैसे की—

" तुष्यन्ति भौजनैर्विप्राः मयूर घन गर्जितैः ।
साधवः पर कल्याणैः खल पर विपत्ति भिः ॥ "

सूरिजीने भाव यज्ञ का व्याख्यान करते हुवे कहा कि—

" सत्य यूपं तपो ह्यग्निः कर्माणा. समिधोमम् ।
अहिंसामहुति दद्या. देष यज्ञ सतांमतः ॥ "

सत्य का यूप तप की अग्नि कर्मों की समाधी (लकडीयों) और अहिंसा रूपी आहुति से आत्मा कि साथ चिरकाल से कर्म्म लगा हुवा है उन को होम कर आत्मा को पवित्र बनाना विप्रों का धर्म्म बितलाया है इस यज्ञ से जीव स्वर्ग मोक्ष को प्राप्त हो सक्ता है। हे विप्रों तुम पशु हिंसा रूप मिथ्या यज्ञ कर खुद रौद्र नरक में जाने का प्रबन्ध करते हो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

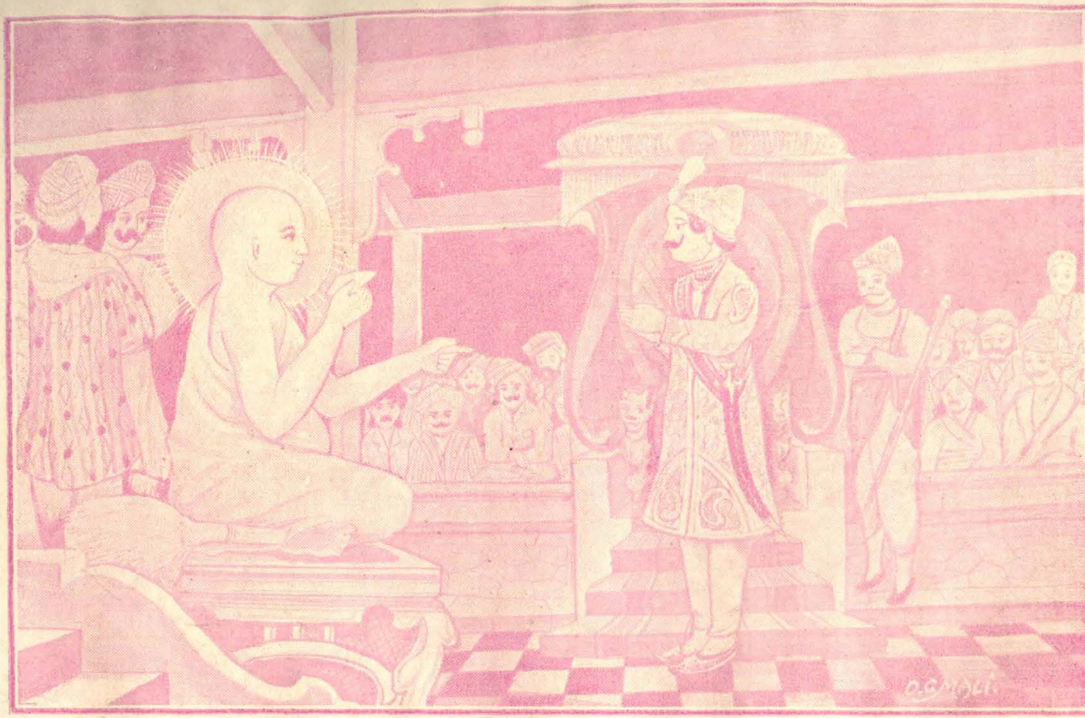

पद्मावती नगरी के महाराजा पद्मसेनको असंख्य कुटुंबोंके साथ आचार्य श्री स्वयंप्रभसूरिजीने उपदेश दे जैन बनाये।

Lakshmi Art, Bombay, 8. (पृ ३०)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

और तुमारे आश्रित रहे हुवे बिचारे भद्रिक जीवो को भी साथ ले जाने की कोशीस करते हो अगर तुम अपना भला चाहाते हो तो तत्वज्ञ पुरुषों के फरमाये हुवे शुद्ध पवित्र धर्म्म का सरण लो कि जिस से तुमारा कल्याण हो ! इस पर ब्राह्मणोने पुच्छा की आपके तत्वज्ञ पुरुषोंने कोनसा रहस्ता बतलाया है ? सूरिजीने कहा—

" देवत्व धीर्जिनेष्ववा मुमुक्षुषु गुरुत्वधी
धर्म धीराहिता धर्मः तत्स्यात्सम्यक्त्वदर्शनम् "

इत्यादि उपदेश के अन्त में राजादि ४५००० घरों को जैन धर्म्म का स्वीकार कर हजारों लाखो पशुओ को अभयदान दीलाया. राजा के पूर्वावस्था में गुरु प्रग्वट ब्राह्मण थे उनने कहा की हमारा भी कुच्छ नाम तो रखना चाहिए कि हम आप के उपदेश से जैन धर्म्म को स्वीकार कीया है इस पर सूरिजीने उन सब की प्रग्वट जाति स्थापन करी आगे चलकर उसी जाति का नाम " पोरवाड " हुवा है श्रीमाल नगर और पद्मावती नगरी के आसपास फिर हजारो घरों को प्रतिबोध दे जैन बना के उन पूर्व जातियों में मीलवाते गये वास्ते यह जातियों बहुत विस्तृत्व संख्या में हो गई । आपश्री के उपदेश से श्रीमाल नगर में श्री ऋषभदेव का मन्दिर पद्मावती नगरी में श्री शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर तथा उस प्रान्त में और भी बहुत से मन्दिरों की प्रतिष्टा आपके कर कमलो से हुई श्रीमाल नगर से यों कहो तो उस प्रान्त से एक सिद्धाचलजी का बडा भारी संघ निकाला था आबू के जीर्ण मन्दिरो का जीर्णोद्धार भी इसी संघने करवाया इत्यादि आपश्री के उपदेश से अनेक धर्म्म कार्य्य हुवे ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आचार्य स्वयंप्रभसूरि के पास अनेक देव देवियों व्याख्यान श्रवण करने को आये करते थे एक समय कि जिक्र है कि श्री चक्रेश्वरी आंबिका पद्मावति और सिद्धायिका देवियों सूरिजी का व्याख्यान सुन रही थी उस समय आकाश मार्गें रत्नचुड विद्याधर अपने सकुंटम्ब नंदिश्वर द्विपकी यात्रा कर सिद्धाचलजी की यात्रा करने को जाते हुवे का वैमान आचार्य स्वयंप्रभसूरि से उपर हो के जा रहा था वह सूरिजी के सिर पर आता ही रूक गया रत्नचूड विद्याधर नायकने सोचा की मेरा विमान को रोकनेवाला कोन है उपयोग लगाने से ज्ञात हुवा कि में जंगम तीर्थ की आशातना करी यह बुरा किया झट वैमान से उत्तर निचे आ सूरिजी को वन्दन नमस्कार कर अपना अपराध की माफी मागी सूरिजीने धर्मलाभ दीया और अज्ञातपणे हुवा अपराध की माफी दी तत्पश्चात् रत्नचूड सपरिवार सूरिजीका व्याख्यान श्रवण करने को बेठ गया आचार्यश्रीने वैराग्यमय देशना दि संसारकी असारता मनुष्य जन्मादि उत्तम सामग्री प्राप्ती की दुर्लभता बतलाई इत्यादि विद्याधर नायक के कोमल हृदय पर उपदेश का असर इस कदर का हुवा कि वह संसार त्याग सूरिजी महाराज के पास दीक्षा लेने को तय्यार हो गया परंतु एक प्रश्न दीलमें उत्पन्न हुवा वह झट खडा हो सूरिजीसे कहने लगा कि—

" सुगुरु मम विज्ञापयति मम परम्परागत श्रीपार्श्वनाथजिनस्य प्रतिमास्ति, तस्यवन्दनो मम नियमोऽस्ति, सारावणलंकेश्वरस्य चैत्यालय अभवत्. यावत् रामेण लंका विध्वंस्मिता तावद् मदीया पूर्वजेन चन्द्रचुड़ नरनाथेन वैताढ्य आनीता साप्रतिमा मम पार्श्वास्ति तया सह अहं चारित्रं ग्रहीष्यामि "

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भावार्थ—जिस समय रामचंद्रजी लंकाका विध्वंस किया था उस समय हमारे पूर्वज चन्द्रचुड विद्याधरोका नायक भी साथमें था अन्योन्य पदार्थोंके साथ रावणके चैत्यालयसे लीलापन्नाकी पार्श्वनाथ प्रतिमा वैताढ्यगिरिपर ले आये थे वह क्रमशः आज मेरे पास है और मुझे एसा अटल नियम हैं कि में उस प्रतिमाका दर्शन सेवा कीयों वगर अन्न जल नहीं लेता हुँ मेरी इच्छा है कि भगवान् की प्रतिमा साथमे रख दीक्षा ले भावपूजा करता हुवा मेरा पूर्व नियमको अखण्डित-पने रखुं । आचार्यश्रीने अपना श्रुतज्ञानद्वारा भविष्यका लाभा-लाभपर विचार कर फरमाया कि "जहां सुखम्" इसपर रत्नचुड विद्याधरोका राजा बडा भारी हर्ष मनाता हुँवा अपने वैमानवासी पांचसो विद्याधरो के साथ दीक्षा लेनेको तय्यार हो गये.

"गुरुणा लाभं ज्ञात्वा तस्मै दीक्षा दत्ता"

शेष विद्याधर दीक्षाका अनुमोदन करते हुवे श्री शत्रुंज-यादि तीर्थों की यात्रा कर वैताढ्यगिरिपर जाके सब समा-चार कहा तत्पश्चात् रत्नचुडराजा के पुत्र कनकचुड को राज गादी बेठाया और वह सहकुटम्ब आचार्यश्री को वन्दन कर-नेको आये रत्नचुड मुनिका दर्शनकर पहला तो उपालंभ दीये बाद चारित्र का अनुमोदन कर देशना सुन वन्दन नम-स्कार कर विसर्जन हुवे । रत्नचुड मुनि क्रमशः गुरू महाराज का विनय सेवाभक्ति करते हुवे "क्रमेण द्वादशांगी चतुर्दश पूर्वी बभूवः" कहने कि आवश्यक्ता नहीं है पहला तो आपका जन्म ही विद्याधर वंशमे दूसरा आप विद्याधरो के राजा तीसरा विद्यानिधि गुरुके चरणारविंद की सेवा कि फिर कभी कीस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बात की आपश्री स्वल्प समयमे द्वादशांगी चौदापूर्वादि सर्वागम और अनेक विद्या के पारगामि हो गये वैसे ही धैर्य गांभिर्य शौर्य तर्कवितर्क स्याद्वादादि अनेक गुणोमें निपुण होगये. इधर आचार्य स्वयंप्रभसूरि शासनोन्नति शासन सेवा कर अनेक भव्योंका उद्धार करते हुवे अपनि अन्तिमावस्था जान. रत्नचुडमुनिको योग्य जान.

" गुरुणा स्वपदे स्थापितः श्रीमद्वीरजिनेश्वरात् द्विपंचाशत वर्षे (५२) आचार्यपद स्थापिताः पंचशत साधुसह धरां विचरन्ति "

भगवान् वीरप्रभुके निर्वाणात् ५२ वर्षे रत्नचुडमुनिको आचार्यपदपर स्थापनकर ५०० मुनियोंके साथ भूमण्डलपर विहार करनेकी आचार्य स्वयंप्रभसूरिने आज्ञा दी. अन्य हजारों मुनि आचार्य रत्नप्रभसूरि की आज्ञासे अन्योन्य प्रान्तोंमे विहार करने लगें. आप सलेखना करते हुवे अन्तमे श्री सिद्धगिरिपर एक मासका अनसन कर स्वर्गमे अवतीर्ण हुवे इति पार्श्वनाथ भगावन् का पंचवापट्ट स्वयंप्रभसूरि हुवे।

आपश्रीका शासनमें भगवान् महावीर–गौतम–सौधर्म्म और जम्बुस्वामिका मोक्ष श्रीमाल पोरवाड जातियों कि स्थापना और अनेक राजा महाराजाओ को धर्मबोध लाखो पशुओको जीवतदान और यज्ञमें हजारों पशुओका बलिदानरूप मिथ्यारूढियो का जडामूलसे नष्ट करदेना इत्यादि बहुत धर्म्म व देशोन्नति हुईथी.

(६) आचार्य स्वयंप्रभसूरि के पट्ट प्रभाकर मिथ्यात्वान्धकार को नाश करनेमे सूर्यसदृश आचार्य रत्नप्रभसूरि (रत्नचुड) हुवे इधर जम्बुस्वामिके पट्टपर प्रभवस्वामि भी महा प्रभाविक

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हुवे दोनो आचार्यो की आज्ञावृति हजारो मुनियों पृथ्वीमण्डल पर विहारकर जैनधर्म्मका खुब प्रचार कर रहेथे यज्ञवादियो का जोर बहुत हट गया था पर बौद्धोका प्रचार आगे बढ रहाथा केइ राजाओने भी बौधधर्म्म स्वीकार करलीया था तथपि जैन जनताकी संख्या सबसे विशाल थी. इसका कारण जैनमुनियो कि विशाल संख्या और प्रायः सब देशोमे उनका विहार था. दूसरा जैनोका तत्त्वज्ञान और आचार व्यवहार सबसे उच्च कोटीका था जैन और बौद्धोका यज्ञनिषेध के विषय उपदेश मीलता जुलताही था वेदान्तिक प्रायः लुप्तसा हो गये थे. जैन और बौद्धोके वाद विवाद भीं हुवा करता था.

आचार्य रत्नप्रभसूरि एकदा सिद्धगिरि की यात्रा कर संघ के साथ आर्बुदाचल की यात्रा करी वहांपर रात्रिमें चक्रेश्वरी देवीने सूरिजीको विनंति करीकी हे दयानिधि? आपके पूर्वजोने मरूभूमि मे विहार कर अनेक भव्योका कल्याण कर असंख्यात पशुओंकी बलिरूपी 'यज्ञ' जैसे मिथ्यात्व कों समूलसे नष्ट कर दीया पर भवितव्यता वसात् वह श्रीमालनगरसे आगे नहीं बड सके वास्ते अर्ज हैं कि आप जैसे समर्थ महात्मा उधर पधारे तो बहुत लाभ होगा? सूरिजीने देविकी विनंति को स्वीकार कर कहा की ठीक है मुनियों को तों जहां लाभ हो वहांहो विहार करना चाहिये इत्यादि सन्मानित वचनोसे देवीको संतुष्ट कर आप अपने ५०० मुनियों के साथ मरूभूमिकी तरफ विहार किया।

उपदेशपट्टन (हालमे जिसे ओशीया कहते है) की स्थापना-इधर श्रीमालनगरका राजा जयसेन जैनधर्म्मका पालन करता हुवा अनेक पुन्य कार्य कीया पट्टावलि नम्बर ३ मे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लिखा है कि जयसेनराजाने अपने जीवनमे ३०० नयामन्दिर ६४ बार तीर्थोंका संघ निकाला और कुँवे तलाव वावडीयों वगरह कराई विशेष आपका लक्ष स्वाधर्मियों की तरफ था जयसेनराजा के दो राणियों थी बडी का भीमसेन छोटी का चन्द्रसेन जिस्मे भीमसेन तो अपनि मातके गुरु ब्राह्मणों के परिचयसे शिवलिंगोपासकथा और चन्द्रसेन परम जैनोपासक था. दोनो भाइयों में कभी कभी धर्म्मवाद हुवा करता था. कभी कभी तो वह धर्म्मवाद इतना जोर पकड लेता था की एक दूसरा का अपमान करने में भी पीच्छा नहीं हटते. थे ?

यह हाल राजा जयसेन तक पहुंचनेपर राजाको बडा भारी रंज हुवा भविष्यके लिये राजा विचारमें पडगया कि भीमसेन बडा है पर इसकों राज देदीया जावे तो यह धर्म्मान्धताके मारा और ब्राह्मणोकी पक्षपातमे पड जैन धर्म्म ओर जैनोपासकोका अवश्य अपमान करेंगा ? अगर चंद्रसेनकों राज देदीया जायतो राजमे अवश्य विग्रह पैदा होगा इस विचारसागरमें गोता-खाता हुवा राजाको एक भी रहस्ता नहीं मीला पर काल तो अपना कार्य्य कीया ही करता है राजाकी चित्तवृतिको देख एक दिन चन्द्रसेनने पुच्छाकि पिताजी आपका दीलमें क्या है इसपर राजाने सब हाल कहा चन्द्रसेनने नम्रतापूर्वक मधुर वचनोसे कहा पिताजी आपतो ज्ञानी है आप जानते हे की सर्व जीव कर्म्माधिन है जो जो ज्ञानियोने देखा है अर्थात् भविष्यता होगा सोही होगा आप तो अपने दिलमें शान्ति रखो जैन धर्म्म का यह ही सार है मेरी तरफसे आप खातरी रखिये कि मेरी नशोमें आपका खुन रहेगा वहां तक तो में तन मन धनसे जैन धर्म्म की सेवा करूगा। इससे राजा जयसेन को परम संतोष हुवा तद्यपि अपनि अन्तिमा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वस्था में मंत्रियो उमरावो को खानगीमे यह सूचन करदीथी की मेरे पीच्छे राजगादी चन्द्रसेन को देना कारण वह. राज के सर्व कार्य्यो में योग्य है फिर राजातो अरिहंतादि पंचपरमेष्टि का स्मरण पूर्वक मृत्युलोग और नाशमान शरीर का त्याग कर स्वर्गकी तरफ प्रस्थान कर दीया. यह सुनते ही नगरमे शोक के बादल छा गये. हाँहाँकार मचगया, सबलोगोने मिलके राजाकी मृत्युक्रिया वडाही समारोह के साथ करी बाद राज-गादी बेठानेके विषयमे दो मत हो गया एकमत का कहनाथा कि भीमसेन बडा है वास्ते राजका अधिकार भीमसेनको है दूसरा मत था की महाराज जयसेनका अन्तिम कहना है कि राज चन्द्रसेन को देना और चन्द्रसेन राजगुण धैर्य्य गांभिर्य वीरता-प्राक्रमी और राज तंत्र चलानेमे भी निपुण है इन दोनो पार्टि-योंके वाद विवाद तर्क वाद यहां तक वडगयाको जिस्का निर्णयकरना भुजवलपर आपडा पर चन्द्रसेन अपने पक्षका-रोको समजादीया की मुझे तो राजकी इच्छा नहीं है आप अपना हटको छोड दीजिये. गृह कलेशसे भविष्यमें बडी भारी हानी होगा इत्यादि समझाने पर उनने स्वीकार कर लिया बस । फिर थाही क्या ब्रह्मणों का और शिवोपासकोका पाणि नी गज चढ गया बडी धामधूमसे भीमसेनका राजाभिषक हो गया. पहला पहल ही भीमसेनने अपनि राज सताका जोर जुलम जैनोपर ही जमाना शरु कीया कभी कभी तो राजसभामेभी चन्द्रसेनके साथ धर्म्म युद्ध होंने लगा । तब चन्द्रसेनने कहा कि महाराज अब आप राजगादीपर न्याय करने को विराजे है तो आपका फर्ज है की जैनोको और शिवोको एक ही दृष्टिसे देखे जैसे महाराजा जयसेन परम जैन होने पर भी दोनो धर्म्म वालोको सामान दृष्टिसे ही देख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तेथे में ठीक कहता हुँ कि आप अपनी कुट नीतिका प्रयोग करोंगे तो आपके राजकी आज जो अबादी है वह आखिर तक रहना असंभव है इत्यादि बहुत समजाया पर साथमे ब्राह्मण भीतो राजाकी अनभिज्ञताका लाभ ले जैनोसे बदला लेना चाहाते थे भीमसेनको राजगादी मीली उस समयसे जैनोपर जुलम गुजारना प्रारंभ हुवा आज जैन लोगा पुरी तंग हालतमें आ पडे तब चन्द्रसेन के अध्यक्षत्वमे एक जैनोकी विराट सभा हुइ उसमें यह प्रस्ताव पास हुवा कि तमाम जैन इस नगरको छोड देना चाहिये इत्यादि बाद चन्द्रसेन अपना दशरथ नामका मंत्रीको साथले आबुकी तरफ चलधरा वहांपर एक उन्नत भूमि देख नगरी बसाना प्रारंभकरदीया बाद श्रीमाल नगरसे ७२००० घर जिस्मे ५५०० घर तो अर्बाधिप और १००० घर करीबन् कोड पति थे वह सभी अपने कुटम्ब सह उस नुतन नगरीमें आगये। उस नगरीका नाम चन्द्रसेन राजाके नामपर चन्द्रावती रखदीया प्रज्याका अच्छा जम्माव होनेपर चन्द्रसेनको वहांका राज पद दे राज अभिषेक कर दीया. नगरीकी आबादी इस कदर से हुइ की स्वल्प समयमें स्वर्ग सदृश बन गइ राजा चन्द्रसेन के छोटे भाइ शिवसेनने पास ही में शिवपुरी नगरी बसादी वह भी अच्छी उन्नतिपर बस गइ.

इधर श्रीमाल नगरमे जो शिवोपासक थे वह ही रह गये नगरकी हालत देख भीमसेनने सोचा की ब्रह्मणों के धोखा में आके मेने यह अच्छा नहीं किया पर अब पश्चाताप करनेसे होता क्या है रहे हुवे नागरिको के लिये उस श्रीमाल नगरके तीन प्रकोट बनाये पहला में क्रोडाधिप दुसरा में लक्षापति तीसरा में साधारण लोग एसी रचनाकरके श्रीमाल नगरका नाम भीन्नमाल रखदीया यह राजा के नामपर ही रखा था कारणउधर चन्द्रसेनने अपने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नामपर चन्द्रावती नगरी आबाद करीथी चन्द्रसेनने चन्द्रावती नगरी में अनेक मन्दिर बनाया जिस्की प्रतिष्ठा आचार्य स्वयंप्रभसूरि के करकमलोंसे हुइ थी अस्तु चन्द्रावतो नगरी विक्रमकी बारहवी तेरहवी शताब्दी तक तो बडी आबाद थी ३६० घरतो क्रोडपति के थे और ३०० जैन मन्दिर थे हमेश स्वामीवात्सल्य हुवा करता था आज उसका खन्डहर मात्र रह गया है यह समयकी ही बलीहारी है

इधर भिन्नमाल नगर शिवोपासकों का नगर बन गया वहांका कर्त्ता हर्त्ता सब ब्राह्मण ही थे, राजा भीमसेन एक नाम का ही राजा था राजा भीमसेनके दो पुत्र थे एक श्रीपुंज दूसरा उपलदेव पटावली नं. ३ में लिखा है कि भीमसेनका पुत्र श्रीपुंज और श्रीपुंज के पुत्र सुरसुंदर और उपलदेव पर समय का मीलन करनेसे पहली पट्टावलीका कथन ठीक मीलता हुवा है। महाराज भीमसेनके महामात्य चन्द्रवंशीय सुवड था उसके छोटा भाइका नाम उहड था सुवड के पास अठारा क्रोडका द्रव्य होनेसे पहला प्रकोट में और उहड के पस नीनाणवें लक्षका द्रव्य होनेसे दूसरा कोटमे बसता था एक समय उहड के शरीरमे रात्रिमें तकलीफ होनेसे यह विचार हुवा कि हम दो भाइ होने पर भी एक दूसरे के दुःख सुखमें काम नहीं आते है वास्ते एक लक्ष द्रव्य वृद्ध भाइसे ले में क्रोडपति हो पहला प्रकोट में जावसुं. शुभे उहड अपने भाई के पास जा के एक लक्ष द्रव्य की याचना करी इसपर भाईने कहा की तुमारे विगर प्रकोट शुन्य नहीं है (दूसरी पट्टावलि मे लिखा है की भाई की ओरत ने एसा कहां) कि तुम करज ले क्रोडपति होनेकी कौशीस करते हों इत्यादि यह अभिमान का वचन उहड को बडा दुःखदाई हुवा झट वहांसे निकल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

के अपने मकानपर आके एक लक्ष द्रव्य पैदा करनेका उपाय सोचने लगा.

इधर युगराज श्रीपूंज के और उपलदे व राजकुमर के आपस में बोलना होनेपर श्रीपूंज ने कहा भाई एसा हुकम तों तुम अपने भुजबलसे राज जमावो तब ही चलेगा ! इस ताना के मारा उपलदेव राजकुमर प्रतिज्ञा कर ली की जब हम भुज बलसे राज स्थापन करेंगे तब ही आप को मुह बतलावेंगें बस ! इसके सहायक ऊहड मंत्री विग्रचित में बेठा ही था दोनों के आपस में बातें हो जाने से वह भि भिन्नमालनगर से निकल गया और चलते चलते रहस्तामें एक मनुष्य मीला उसने पुच्छा कुमरसाब आज किस तरफ छडाई हुई है उपलदेवने उत्तर दीया कि हम एक नया राज स्थापन करने कों जा रहे है फिर पुच्छा यह साथ में कोन है? यह हमारा मंत्रि है उस सरदारने कहा कुमर साब राज स्थापन करना कोइ बालकों का खेल नहीं है आप के पास एसी कौनसी सामग्री है कि जिसके बलसे आप राज स्थापन कर सकोगें ? कुमर ने कहां की हमारी भूजामे सब सामग्री भरी हुई है इसी भुज बलसे ही हम नया राज स्थापन कर सकेगें ? इस वीरता का वचन सुन सरदारने आमन्त्रण कीया की आज दिन बहुत तंग हे वास्ते रात्रि हमारे वहां विश्राम लो कल पधार जाना बहुत आग्रह होनेसे कुमर ने स्वीकार कर उस सरदार के साथ चल दीया वह सरदार था संग्रामसिंह वैराट नगर का राजा, कुमर को बडे सत्कार के साथ अपना नगरमें लाया बहुत स्वागत कर उसका शौर्य धैर्य और धीरता देख संग्रामसिंह अपनि पुत्री की सगाई उस उपलदेव कुमर के साथ कर दी रात्रि तो वहां ही रहै दूसरे दिन प्रातःसमय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वहांसे चल दीया रहस्ता में अश्व व्यापारियोंसे ९९ अश्व (दूसरी पट्टावलिमें १८० अश्व लिखा है) ले के ढेलीपुर (दिल्हि) पहुंचे वहां श्री साधु नामका राजा राज करता था वह छैमास राजका काम देखता था और छैमास अन्तेवर महलमे रहता था उत्पलदेव राजकुमार हमेशा राज दरबार मे जाया करता था और एकेक अश्व भेट किया करता था. जब ९९ दिन व १८० दिनमें सब घोडें भेटकर चुका तब दूसरे दिन राजा राज सभामें आया और वह अश्व भेट की वात सुनी तब उपलदेव कुमार कों बुलाया पुच्छनेपर कुमरने कहां मे भिन्नमाल के राजा भीमसेन का पुत्र हुं नयानगर वसाने के लिये कुच्छ जमीन की याचना करने के लिये यहां आया हुं इस विषय पट्टावलियों के अलावे कुच्छ प्राचीन कवित भी मीलते हे पर वह स्यात् पीच्छे से किसी कवियोंने रचा हुवा ज्ञात होता है। खेर राजा श्री साधु कुमर की वीरता पर मुग्ध हो एक घोडी दे दी की जावों जहांपर उजड भूमि देखो वहां ही तुम अपना नया नगर वसा लेना पासमें एक शुकनी वेठा था उसने कहा कुमार साब जहां घोडी पेशाब करे वहां ही नगर बसा देना, इसी शुकनो पर राजकुमार और मंत्री वहां से सवार हो चल धरे कि शुवह मंडोर से कुच्छ आगे उजडभूमि पडी थी वहां घोडिने पैशाब कीया वस वहां ही छडी रोप दी नगर बसाना प्रारंभ कर दीया उसीली जमीन होनेसे उस नगर का नाम उपणपट्टन रख दीया मंत्रीश्वरने इधर उधर से लोगों को लाके नगरमें वसा रहे थे यह खबर भीन्नमाल में हुइ वहां से भी उपलदेव उहड के कुटम्ब के साथ वहुत से लोग आये।

"ततो भीनमालात् अष्टादस सहस्र कुटम्ब आगत

द्वादश योजन नगरी जाता " इस के सिवाय केइ प्राचीन कवित भी मीलते है ।

" गाडी सहस गुण तीस, रथ सहस इग्यार
अठारा सहस असवार, पाला पायक को नहीं पार
ओठी सहस अठार, तीस हस्ती मद झरंता
दश सहस दुकान, कोड व्यापार करंता
पंच सहस विप्र भीन्नमाल से, मणिधर साथे माडिया. "
शाहा उहडने उपलदे सहित, घर बार साथे छांडिया ।१।

अगर उपलदे व और ऊहड के कुटुम्ब अटारा हजार और शेष बाद में आया हो पर यह तो ठीक है कि भिन्नमाल तुट के उपशपट्टन बसी है । मूळ पट्टावलिमें नगर का विस्तार बारह योजन का है साथ में मंडोवर भी उस समय में मोजुद थी उपश का नाम संस्कृत ग्रन्थकारोने उपकेशपट्टन लिखा है उपश का अपभ्रंश " ओशीयों हुवा है दन्तकथाओं से ज्ञात होता है कि ओशीयों से १२ मिल तिवरी तेलीपुरा था ६ मिल खेतार क्षत्रिपुरा था २४ मिल लोहावट ओशीयों की लोहामंडी थी ओशीयों से २० मिल पर घटियाला ग्राम है वहां पर दरवाजा था जिसके पुरांणे कुच्छ चिन्ह अभी भी खोद काम से मिलते है थोडा ही वर्षा पहला तिवरी के पास खोद काम करतों एक शिखरबंद्ध जैन मन्दिर जमीन से निकलाहै इत्यादि प्रमाणों से उपश नगरी इतिनी बडी हो तों असंभव नही है-दूसरा यह भी तो है कि जहां चार पांच लक्ष घरों की संख्या हो वह बारह योजन विस्तार में नगरी हो तो एसा कोइ आश्चर्य भी नहीं है । नूतन वसा हुवा उपकेशपट्टन थोडा ही वर्षों में इतना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आ० रत्नप्रभसूरिजीने पांचसो मुनियोंके साथ, उपकेशपुर निकटवर्ती लूणाद्रि टेकरी पर समवसरण कीया।

(पृ ९०)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आबाध हो गया की वहां लाखो घरों की वस्ती हो गई व्यापार का एक केन्द्र स्थान बन गया पास मे मीटा मेहरबान समुद्र भी था वास्ते जल थल दोनों रहस्ते व्यापार चलता था राजा की तरफ से व्यापारीयों को बडी भारी सहायता मीलती थी जहां व्यापार की उन्नति है वहां राजा प्रजा सब की उन्नति हुवा करती है इति उपकेशपट्टन स्थापना सम्बन्ध ।

आचार्यश्री रत्नप्रभसूरि अपने ५०० मुनियों के साथ भूमण्डल को पवित्र करते हुवे क्रमसे उपकेशपट्टन पधारे वहां लुणाद्री छोटीसी पहाडीथी वहां ठेर गये " मासकल्प अरण्येस्थिता " एक मासकी तपश्चर्या कर पहाडीपर रहे पर किसी एकबच्चातकने भी सूरिजी की खबर न ली. बाद केइ मुनियों के तप पारणा था वह भिक्षाके लिये नगर में गये "गोचर्या मुनीश्वरा व्रजंति परंभिक्षा न लभते लोकामिथ्यत्व वासिता यादृशा गता तादृशा आगता मुनीश्वराः तपोवृद्धि पात्राणि प्रतिलेष्यमास यावत् संतोषेणास्थिताः नगरमे लोग वाममार्गि देवि उपासक मांस मदिरा भक्षी होनेसे मुनियों को शुद्ध भिक्षा न मीलनेपर जैसे पात्रे ले के गयेथे वैसेही वापिस आगये मुनियोंने सोंचा कि आज और भी तपोवृद्धि हुइ पात्रोका प्रतिलेखन कर सन्तोषसे अपना ज्ञानध्यानमे मग्न हो आत्मकल्यानमें लग गये । इसपर (१) यति रामलालजी महाजनवंश मुक्तावलिमें लिखते है कि रत्नप्रभसूरि एक शिष्यके साथ आये भिक्षा न मिलनेसे गृहस्थों की औषधी कर भिक्षा लातेथे. और (२) सेवगलोग कहते है कि उन मुनियों को भिक्षा न मीलनेसे हमारे पूर्वजोंने भिक्षा दी थी (३) भाट भोजक कहते है कि भिक्षा न मीलनेपर आचा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

र्यका शिष्य जगलसे लकडीयों काट भारी बना बजारमे वेंचके उसका धान ला रोटी बनाके खाताथा इसी रीतसे उस शिष्यके सिरके बालतक उड गये । एकदा सूरिजीने शिष्यके सिरपर हाथ फेरा तो बाल नही पायें तब पुच्छने पर शिष्यने सब हाल सुनाया जब सूरिजीने एक रुइका मायावी साप बनाके राजाका पुत्रको कटाया और ओसवाल भनाया इत्यादि यह सब मनकलपीत झूटी द्रान्तकथाओं है कारण अखण्डित चारित्र पालनेवाले पुर्वधर मुनियोंकों एसे विटम्बना करनेकी जरूरत क्या अगर भिक्षा न मीली तो फिर उस नगर में रहनेका प्रयोजन हीं क्या उस समय मामुली साधुभी एक शिष्यसे विहार नहीं करते थे तो रत्नप्रभाचार्य जेसे महान् पुरुष विकट धरतीमें एक शिष्यके साथ पधारे यह विलकुल असंभव है आगे भाट भोजको या यतियोंने रत्नप्रभसूरिका समय बीयेबाइसे २२२ का बतलाते है वह भी गलत है जिसका खुलासा हम फिर करेंगें दर असल वह समय विक्रम पूर्व ४०० वर्षका था और भिक्षा के लिये मुनियोंने तप वृद्धि करीथी ।

मुनियों के तपवृद्धि होते हुवेकों बहुत दिन हो गये तब उपाध्यया वीरधवळने सूरिजीसे अर्ज करी कि यहां के सब लोग देवि उपासक वाममार्गि मांस मदिर भक्षी है शुद्ध भिक्षा के अभाव मुनियोंका निर्वाहा होना मुश्किल है ? इस पर आचार्यश्रीने कहा एसाही हो तो विहार करों. मुनिगण तो पहलासे ही तैयार हो रहे थे हुकम मिलतोंही कम्मर बन्ध तय्यार हो गये । यह हाल वहां की अधिष्टायिका चमुंडा देविको ज्ञानद्वारा ज्ञात हुवा तब देविने सोचा कि मेरी सखी चक्रेश्वरी के भेजे हुवे महात्मा यहां पर आये है और यहांसे क्षुद्धा पिपास पिडित चले जावेंगें तो इसमें मेरी अच्छी न लागेगा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat   www.umaragyanbhandar.com

इस विचारसे देवी सूरिजी के पास आई "शासन देव्या कथितं भो आचार्य अत्र चतुर्मासकं करुं तत्र महालाभो भविष्यति" हे आचार्य । आप यहां मेरी विनंतिसे चतुर्मास करो यहां आपको बहुत लाभ होगा इस पर सूरिजी देवि की विनंतिको स्वीकार कर मुनियोंसे कह दीया कि जो विकट तपस्या के करने वाले हो वह हमारे पास रहे शेष यहां से विहार कर अन्य क्षेत्रोंमे चतुर्मास करना इस पर ४६५ मुनि तो गुरु आज्ञासे विहार किया "गुरुः पंचत्रिंशत् मुनिभिः सहस्थितः" आचार्यश्री ३५ मुनियों के साथ वहां चतुर्मास स्थित रहे । रहे हुवे मुनियोंने विकट यानि उत्कृष्ट चार चार मासकी तपस्या करली। और पहाडी की वनराजी मे आसन लगा के सामाधि ध्यान में रमणता करने लग गये । "ज्ञानामृत भोजनम्"

इधर स्वर्ग सदृश उपदृश पकेन में राजा उत्पलदेव राम राज कर रहा था अन्य राणियों में जालणदेवी (सग्रामसिंहकी पुत्री) पट्टराणिथी उसके एक पुत्री जिस्का नाम शोभाग्यदेवी था वह वर योग्य होनेसे राजा को चिंतां हुई वर की तलास कर रहा था एकदा राणिके पास राजाने बात करी तब राणिने कहा महाराज मेरी पुत्री मुझे प्राणसे वल्लभ हे एसा न हो की आप इसकों दूर देशमें दे मेरे प्राणों कों खो बेठो आप एसा वर रहै बाई रात्रिमे सासरे और दिनमें मेरे पास की, तलास करावे कि इत्यादि राजा यह सुन और भी विचारमे पड गया।

इधर उहडदे मंत्रि के तिलकसी नाम का पुत्र अच्छा लिखा पढा रुपमे भी सुन्दर कामदेव तूल्य था उसे देख

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

राजाने सोचाकी शोभाग्यदेवी की सादी इसके साथ कर देनेमे एक तो में मंत्रि का ऋणि हुँ वह भी अदा हो जायगा दूसरा राणिका कहेना भी रह जायगा एसा समझ वडे आडाम्बर के साथ अपनी कन्या शोभाग्यदेवी मंत्रेश्वरका पुत्र तिलोकसी को परणादी. वह दम्पति एकदा अपनि सुखशेय्यमें सुते हुवे थें "मंत्रीश्वर ऊहड सुतं भुजंगेनदष्टः" मंत्रीश्वरके पुत्र तीलोकसी को अकस्मात् सर्प काट खाया " अज्ञ लोक कहते है की सूरिजीने रूइ का साप बना के राजा का पुत्र को कटाया था यह बिलकुल मिथ्या है " नूतन परणा हुवा राजा का जमाई (मंत्रीश्वर का पुत्र) को सांप काट खाने से नगर मे हा-हाकार मच गया बहुत से मंत्र यंत्र तंत्र वादी आये अपना अपना उपचार सबने किया जिस्का फल कुच्छ भी न हुवा आखिर कुमरको अग्नि संस्कार करने के लिये स्मशान ले जाने की तैयारी हुई " तस्य स्त्री काष्ट भक्षणे सशाने आयाता " राजपुत्री सौभाग्यदेवी अपना पति के पीच्छे सती होने को अश्वारूढ हो वह भी साथ मे हो गई। राजा मंत्री और नागरिक महान् दु:खि हुवे रूदन करते हुवे स्मशान भूमि की तरफ जा रहे थे" कारण उस समय एसी मृत्यु क्वचित् ही होती थी"—

इधर चमुंडा देविने सोचा कि मेने सूरिजी को विनंति कर रख तो लिया और कहा था कि बहुत लाभ होगा जिसका आज तक मेने कुच्छ भी प्रयत्न नहीं किया पर आज यह अवसर लाभ का है एसा विचार एक लघु मुनि का रूप बना स्मशान की तरक जाता हुवा कुमर का ज्ञापंन (सेविका) के सामने जाके कहा कि " जीवितं कथं ज्वालियतः " भो लोंगों इस जीवत कुमर को जलाने को क्यों ले जाते हो इतना कह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देवितों अदृश हो गई (दूसरी पट्टावलि में वह मुनि सूरिजी का शिष्य था) लोगोंने यह सुन बडा हर्ष मनाया और राजा व मंत्री के पास खुशखबरदी राजाने हुकम दीया कि उस मुनि को लावों, पर मुनि तो अदृश हो गया था तब सब कि स-म्मति से सब लोगों के साथ कुमर का झांपांन को ले सूरि-जी के पास आये " श्रेष्टि गुरु चरणे शिरं निवेश्य एवं कथ-यति भो दयालु ममदेवरूष्टाममगृहीशून्यो भवति तेन कारणेन-मम पुत्र भिक्षां देहि " राजा और मंत्री गुरुचरणो मे सिर झूका के दीनता के बचनो से कहने लगे। हे दयाल। करूणासागर आज मेरेपर देव रूष्ट हुवा मेरा गृह शुन्य हुवा आप महात्मा हो रेखमें भी मेख मारनेकों समर्थ हो वास्ते में आपसे पुत्ररूपी भिक्षा की याचना करता हुं आप अनुग्रह करावे। इसपर उ० वीरधवल ने कहा " प्रासु जल मानीय चरणौप्रक्षाल्य तस्य छंटितं " फासुकजल से गुरु महाराज के चरणो का प्रक्षाल कर कुमर पर छंट को बस इतना केहने पर देरी ही क्या थी गुरु चरणों का प्रक्षाल कर कुमर पर जल छांटतो ही " सहसात्कारेण स-जीव भूवः" एकदम कुमर बेठा हुवा इधर उधर देखने लगा तो चोतरफ हर्षका वाजित्र बज रहा लोग कहने लगे कि गुरु महाराज की कृपासे कुमरजी आज नये जन्म आये है सब लोगोंने नगरमे जा पोषाको बदल के बडे गाजा।बाजा के साथ सूरिजी को हजारो लाखों जिह्वाओं से आशीर्वाद देते हुवे बडे ही समरोह के साथ नगर मे प्रवेश किया. राजाने अपने खजानावालो को हुकम दे दिया कि खजाना में बडिया से पडिया रत्नमणि माणक लीलम पन्ना पीरोजिया लशणियादि बहुमूल्य जवेरायत हो वह महात्माजी के चरणों में भेट करो ? तदानुस्वार रत्नादि भेट किये तथा ऊहड श्रेष्टिने भी बहुत द्रव्य भेट किया।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

" गुरुणा कथितं मम न कार्ये " आचार्यश्रीने फरमाया कि मेने तो खुद ही वैताड्यगिरि का राज्ञ और राज्ञ खजाना त्याग के योग लिया है अब हम त्यागियोंको इस द्रव्यसे क्या प्रयोजन है यह तो गृहस्थ लोगोंका भूषण है अगर इसे देशहित धर्म्महित में लगाया जाय तो पुन्योपार्जित हो सकता है नहींतो दुर्गतिका ही कारण है इत्यादि । अगर हमे खुश करना चाहाते हो तो " भवाद्भिः जिनधर्मोगृह्यतां " आप सब लोग पवित्र जैनधर्मको स्वीकार करो जिससे तुमारा कल्याण हो इत्यादि ।

यह सुन श्रेष्टि वैगरह राजाके पास जाके सब हाल सुनाया आचार्यश्री की निःस्पृहीताने राजाके अन्तकरणपर इतना असर डाला कि वह चतुरांग शैन्या और नागरिक जनोंको साथ ले सुरिजीको वन्दन करनेको वडे ही आडम्बर से आया आचार्यश्रीको वन्दन कर बोलाकि हे भगवान् ! आपतो हमारे जैसे पामर जीवों पर बडा भारी उपकार किया है जिसका बदला इस भवमे तो क्या परभवोभयमे देने को हम लोग असमर्थ है हमारी इच्छा आपश्री के मुखार्विन्दसे धर्म्म श्रवण करने की है ।

आचार्यश्रीने उच्चस्वर और मधुरभाषासे धर्म्मदेशना देना प्रारंभ किया हे राजेन्द्र ! इस आरापार संसारके अन्दर जीव परिभ्रमण करते हुवे को अनंताकाल हो गया कारण कि सुक्षमबादर निगोदमें अनंतकाल पृथ्वीपाणि तेउवायुमें असंख्याताकाल एवं एकेन्द्रियमें अनंतानंतकाल परिभ्रमन कीया बाद कुच्छ पुन्य बढ जानेसे बेन्द्रिय एवं तेन्द्रिय चोरिन्द्रिय व तीर्यंच पांचेन्द्रिय अनार्य मनुष्य या अकाम पुन्योदय देव

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

योनिमें भ्रमन किया पर उत्तम सामग्री के अभाव शुद्ध धर्म्म न मीला, हे राजन्! सुकृतकर्म्मका सुकृत फल और दुःकृत कर्म्मका दुःकृतफल भविष्यमे अवश्य मीलता है सबसे पहला तो जीवोको मनुष्यभव मीलना मुश्किल है कदाच् मनुष्य भव मील गया तो आर्य्यक्षेत्र उत्तम कुल शरीरनिरोग इन्द्रियोपूर्ण और दीर्घायुष्य क्रमशः मीलना दुर्लभ है कदाच यह सब सामग्री मील जावे तो सद्गुरुओंकी सेवा मिलना कठिन है यह आप जानते हो कि गुरु विगरह ज्ञान हो नहीं सकता है जगत् मे एसे भी गुरु नाम धरानेवाले पाये जाते है की वह भांगों पीना, गाजा चडश उडाना, व्यभिचार करना, यज्ञहोम के नाम हजारो लाखों पशुओंके प्राण लुटना मांस मदिरा भक्षण करना इत्यादि अत्याचार करने वालोसे सद्गुणोंकी प्राप्ति कभी नहीं होती है वास्ते आत्मकल्याणके लिये सबसे पहला सद्गुरु की आवश्यकता है सद्गुरु मिलने पर भी सद्आगम श्रवण करणा दुर्लभ है विगरह सुने हिताहित की खबर नहीं पड सक्ती है अगर सुन भी लीया तो सत्य बातको स्वीकार करना बडा ही मुश्किल है स्वीकार करने पर भी उस पर पाबंदी रख उस्मे पुरुषार्थ करना सबसे कठिन है।

हे धराधिप । इस पृथ्वीपर केइ धर्म्म प्रचलित है सबमे प्राचीन और सर्वोत्तम है तो एक जैन धर्म्म है जैन धर्म्म का तत्त्व-ज्ञान इतना उच्च कोटि का है की साधारण मनुष्य उस्मे एकदम प्रवेश होना असंभव है जैन धर्म्म का आचार व्यवहार भी सब से उच्चे दर्जा का है अहिंसा परमो धर्म्मः जैन धर्म्म का मुख्य सिद्धान्त है यह धर्म्म संपूर्ण ज्ञानवाले सर्वज्ञ का फरमाया हुवा है मांस मदिर सिकार परस्त्रीगमन वैश्यागमन चौर्य

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जुवा एवं सात कुव्यसन सर्वता तज्य है रात्रिभोजनादि अभक्ष पदार्थों की बिलकुल मना है जो पूर्वोक्त कार्य करनेवाले धर्म और धर्म्म गुरुओ की तरफ जैन हमेशो तिरस्कार की दृष्टि से देखता है जैन धर्म पालने वालो के लिये मुख्य दोय रहस्ता बतलाया हुवा है (१) गृहस्थ धर्म्म (२) मुनि धर्म्म जिस्मे गृहस्थ धर्म्म के लिये सम्यक्त्व मूल बारहा व्रत है जिस्मे व्यवहार सम्यक्त्व उसे कहते है कि (१) देव अरिहन्त वीतराग सर्वज्ञ लोकालोक के भावो को जाननेवाले सदा परोपकार के लिये जिसका प्रयत्न है जिस्के जीवन की पवित्रता और मुद्रामें शान्त रस देखने से ही दुनियां का भला होता है एसे देव को देव बुद्धिकर मानना इस्के सिवाय राग द्वेष विषय विकार के चिन्ह जिस के पासमे हो जिस के पशुओ की बलि चढती हो एसे देव मे कभी देवत्व न समजे (२) गुरु निग्रन्थ अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचार्य और ममत्व भाव रहीत अचाई सचाई अमाई न्याई वैपरवाई उसका लक्षण है परोपकार पर जिस का जीवन है इत्यादि (३) धर्म्म जिस देवने अपना संपूर्ण ज्ञान बलसे दुनियों का उद्धार के लिये धर्म्म कहा है जैसे दान शील तप भाव पूजा प्रभावना सामायिक प्रतिक्रमण व्रत नियम विनय भक्ति सेवा उपासना आसन समाधि ध्यान इत्यादि अर्थात् पहला इन देवगुरु धर्म्म पर खुब दृढ श्रद्धा प्रतित और रूची होना जरूरी है बाद अगर गृहस्थ धर्म्म पालना है तों उसके लिये बारहा व्रत है (१) पहला व्रतमे हलता चलता जीवों को विगर अपराध मारनेकी बुद्धिसे नहीं मारना अगर कोइ अपराध करे कोइ मारने को आवे आज्ञा का भंग करे उस का सामना करना इस व्रत का भंग नहीं है (२) दूसरा व्रत में राजदंड ले लोगों मे भांडाचार हो एसा बडा झुटबोलना मना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat　　www.umaragyanbhandar.com

है (३) तीसरा व्रतमे पूर्वोक्त स्थुल चौरी करना मना है (४) चतुर्थ व्रत में परस्त्रि वेश्यादि से गमन करना मना है (५) पंचवा व्रत में धनमाल राज स्टेट वगैरह का नियम करने पर अधिक वढाना मना है (६) छठा व्रत में चोतरफ दिशाओं में जितनी भूमिका में जानेका प्रमाण कर लिया हो उससे अधिक जाना मना है (७) सातवा व्रत में पहला तो भक्षाभक्षका विचार है मांस मदिर वासीविद्लल सहेत मक्खनादि जो कि जिस्मे प्रचूर जीवों की उत्पति हो वह खाना मना है दूसरा व्यापरापेक्षा है जिस्मे ज्यादा पाप और कम लाभ और तुच्छव्यापर हो एसे व्यापार रूपी कर्म्मादान करनामना है (८) अनर्था दंडव्रत है जोकी अपना स्वार्थ न होनेपर भी पापकारी उपदेशका देना दूसरों की उन्नति देख इर्षा करना आवश्यकतासे अधिक हिंसा कारी उपकरण एकत्र करना प्रमाद के वस हो घृत तेल दुद्ध दही छास पाणि के वरतन खुले रख देना इत्यादि (९) नौवा व्रतमे हमेशां समताभाव सामायिक करना (१०) दशवा व्रतमे दिशादि मे रहे हुवे द्रव्यादि पदार्थों के लिये १४ नियम याद करना (११) ग्यारवा व्रतमे आत्माको पुष्टिरूप पौषध करना (१२) बारहवा व्रत अतित्थी महात्माओको सुपात्रदान देना इन गृहस्थधर्म्म पालने वालोको हमेशों परमात्मा की पूजा करना नये नये तीर्थो की यात्रा करना स्वाधर्मि भाइयों के साथ वात्सल्यता और प्रभावना करना जीवदया के लिये बने वहां तक अमरिय पहडा फीराना, जैनमन्दिर जैनमूर्ति ज्ञान साधुसाध्वियों श्रावक श्राविकाओं एवं सात क्षेत्रमे समर्थ होनेपर द्रव्य कों खरचना और जिनशासनोन्नति मे तनमन धन लगा देना गृहस्थोंका आचार है आगे बड के मुनिपद की इच्छावाले सर्व प्रकारसे जीवहिंसाका त्याग एवं झूट बोलना चौरी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

करना मैथुन और परिग्रहका सर्वता परित्याग करना. सिर का बाल भी हाथोंसे खेचना पैदल विहार करना परोपकारके सिवाय और कोइ कार्य्य नहीं करना एसा मुनियोंका आचार है हे राजन्! इस पवित्र धर्म्मका सेवन करने से भूतकाल में अनंते जीव जरामरण रोगशोक और संसारके सब बन्धनोसे मुक्त हो सास्वते सुख जो मोक्ष है उस को प्राप्ति कर लीया था वर्तमान मे कर रहे है और भविष्यने करेंगा वास्ते आप सब सज्जन मिथ्या पाखण्ड मत्तका सर्वता त्याग कर इस शुद्ध पवित्र सर्वोत्तम धर्मको स्वीकार करो ताकी आप इस लोक परलोकमे सुखके अधिकारी बनों किमधिकम्।

सूरिजी महाराजकी अपूर्व और अमृतमय देशना श्रवण कर राजा प्रजा एकदम अजब गजब और आश्चर्यमें गरक बन गये. हर्ष के मारे शरीर रोमाचित हो गये कारण इस के पहला कभी एसी देशना सुनी ही नहीं थी। राजा हाथ जोड बोला कि हे प्रभो! एक तरफ तो हमे बडा भारी दुःख हो रहा है और दूसरी तरफ हर्ष हमारा हृदय में समा नहीं सक्ता है इस का कारण यह है कि हमने दुर्लभ मनुष्यभव पाके सामग्रीके होते हुवे भी कुगुरुओ की वासना की पास मे पड हमारा अमूल्य समय निरर्थक खो दीया इतना ही नही परधर्म्म के नाम से हम अज्ञान लोगोंने अनेक प्रकारका अत्याचार कर मिथ्यात्वरूपो पाप की पोठसिर पर उठाइ वह आज आपश्रीका सत्योपदेश श्रवण करने से ज्ञान हुवा है फिर अधिक दुःख इस बातका है कि आप जैसे परमयोगिराज महात्मा पुरुषोंका हमारे यहां विराजना होने पर भी हम हतभाग्य आप के दर्शनतक भी नहीं किया।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हे प्रभो । इसका कारण यह था कि हम लोगों को पहलासे हि एसा शिक्षण दीया जाता था की जैन नास्तिक है ईश्वर को नहीं मानते है शास्त्रविधिसे यज्ञ करना भी वह निषेध करते है नग्न देव को पूजते है अहिंसा २ कर जनताका शौर्य पर कुठार चलाते है इत्यादि पर आज हमारा शोभाग्य है कि आप जैसे परमोपकारी महात्माओंके मुखार्विन्दसे अमृतमय देशना श्रवण करनेका समय मीला, हे दयाल । आज हमार सब भ्रम दूर हो गया है नतों जैन नास्तिक है न जैनधर्म जनताको निर्बल कायर बनाता है जिस्मे ईश्वरत्व है उसे जैनधर्म्म ईश्वर (देव) मानते है जैनधर्म एक पवित्र उच्च कोटीका स्वतंत्र धर्म्म है हे विभों । इतने दिन हम लोग मिथ्यात्व रुपी नशेमें एसे बेभान हो मिथ्या फाँसीमे फस कर सरासर व्यभिचार अधर्म्मको धर्म समझ रखाथा सत्य है कि विना परीक्षा पीतलकोभी मनुष्य सोना मान धोखा खालेता है वह युक्ति हमारे लिये ठीक चरतार्थ होती है हे भगवन् । हम तो आपके पहलेसेही ऋणि है आप श्रीमोनोंने एक हमारे जमाइकोही जीवतदान नहीं दीया परहम सबकों एक भवके लियेही नहीं किन्तु भवोभवके लिये जीवन दीया है नरकके रहस्ते जाते हुवे हमको स्वर्ग मोक्षका रहस्ता बतला दिया है इत्यादि सूरिजी के गुण कीर्तन कर राजाने कहा की हम सब लोग जैनधर्म्म स्वीकार करने को तैयार है आचार्यश्रीने कहा "जहांसुखम्" इस सुअवसर पर एक नया चमत्कार यह हुवा की आकाशमें सनघन अवाजो और झाणकार होना प्रारंभ हुवा सब लोग उर्ध्व दृष्टि कर देखने लगें इतनेमे तो वैमानोंसे उत्तरते हुवे सैंकडो विद्याधर नरनारियों सालंकृत शरीर सूरिजी के चरण कमलोमें बन्दना करने लगें इतनामे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ओर आकाश गुंज उठा झणकार रणकार के साथ चक्रेश्वरी आंबिका पद्मावती ओर सिद्धायक। देवियों सूरिजीकों वन्दनार्थ आई वहभी नम्रता भावसे वन्दन किया. राजा मंत्री ओर नागरिक लोग यह दृश्य देख चित्रवत् हो गये अहो हम निर्भाग्य इसे अमूल्य रत्नको एक कांकरा समज तिरस्कार किया इस पापसे हम कैसे छुटेंगें ! राजा प्रजा सूरिजीसे जैनधर्म धारण करनेमें इतने तो आतुर हो रहे थे की सब लोगोंने जनौयों व कण्ठियों तोड तोडके सूरिजी के चरणोंमे डालदी और अर्ज करी कि भगवान् आपहो हमारे देव हो आपही हमारे गुरु हो आपही हमारे धर्म्म हो आपके वचनहो हमारे शास्त्र है हम तो आजसे आप और आपकी सन्तानके परमोपसक है इतनाही नहीं पर हमारी कुल संतति भविष्यमे सूर्यचन्द्र पृथ्वीपर रहेगा यहांतक जैनधर्म्म पालेगा और आपके सन्तानके उपासक रहेगा यह सुनतेही चक्रेश्वरी देवि बज्ररत्नके स्थालमे वासक्षेप लाई सूरिजीने राजा उपलदेव मंत्रि उहड और नागरिक क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्योंको पूर्व सेवित मिथ्यात्वकी आलोचन करवाके महा ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सयुक्त महामंत्र पूर्वक विधि विधान के साथ वास क्षेप दे कर उन भिन्न भिन्न वर्ण और जातियोंका एक "महाजन संघ"[1] स्थापन किया उस समय अन्य देवियों के साथ चमुंडा भी हाजर थी वह विच में बोल उठी कि हे भगवान् । आप इन सब को जैनोपासक बनाते सो तो ठीक है पर मेरा कडूडके मडूडके न छोडावे सूरिजीने कहा ठीक है देवि तुमारा कडूडका मडूडका न छुडाया जावेगा । इस पवित्र दृश्य को देख उन विद्याधरोंने

---

१ देखो नोट नम्बर ३

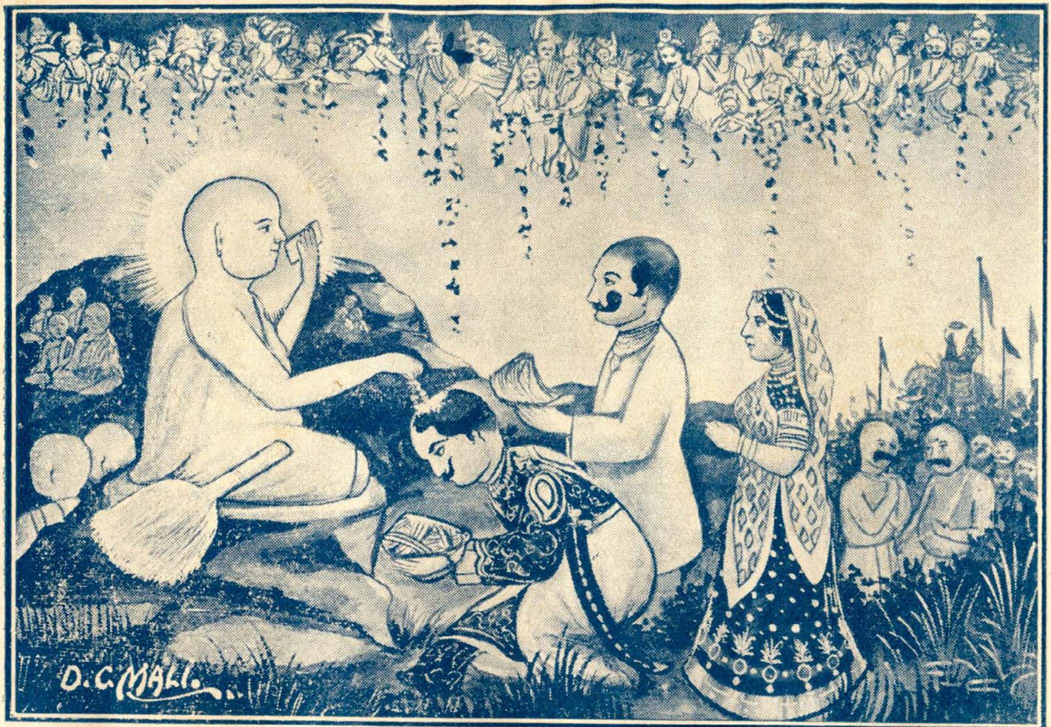

राजा और प्रधानने सख्यातीत कुटुंबियोंके साथ सूरिजीके वासक्षेपसे जैन धर्म अंगीकार कीया, और महाजन वंशकि स्थापना हुई, वंदनार्थ आए हुए देव विद्याधरोंने पुष्प वृष्टि की। (पृ ७३)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat
www.umaragyanbhandar.com

राजा उपलदेवादि सब को उत्साहावृद्धक धन्यवाद दीया कि आप लोगोंका प्रबल पुन्योदय है कि एसे गुरु महाराज मीले है आपको कोटीशः धन्यवाद है कि मिथ्या फांसी से छुट पवित्र धर्म्म कों स्वीकार कीया है आगे के लिये आप ज्ञान श्रद्धा पूर्वक इस धर्म्म का पालनकर अपनि आत्मा का कल्यान करते रहना राजा उपलदेव उन विद्याधरों का परमोपकार माना और स्वाधर्मि भाइ समज महमान रहने की विनति करी इसपर वह आपसमे वात्सल्यता करते हुवे बाद देवियों और विद्याधर सूरिजी को वन्दन नमस्कार कर विसर्जन हुवे।

अब तो उपकेशपुर के घर घरमें जैन धर्म्म की तारीफ होने लगी और रहे हुवे लोग भी जैन धर्म्म को स्वीकार करने लगें यह बात बाममार्गिमत्त के अध्यक्षो के मट्टों तक पहुंच गई की एक जैन सेवडा आया है वह न जाने राजा प्रज्यापर क्या जादु डारा कि वह सबको जैन बना दीया. अगर इस पर कुच्छ प्रयत्न न किया जावेगा तो अपनि तो सब की सब दुकानदारी उठ जावेगा। यह तों उनको विश्वास था कि राजा प्रज्या कों जैसे पाठ पढावेगें वैसे ही मानने लग जावेंगे सेवडाने उसे जैन बनाया तो चलो अपुन फीरसे शैव बना देंगें एसा सोच वह सब जमात की जमात सज धज के राज सभामे आये. परं जैसे किसीका सर्व श्रेय लुट लेनेसे उन पर दुर्भाव होता है वैसे उन पाखण्डीयों पर राजा प्रजा का दुर्भाव हो गया था. राजाने न तो उनको आदर सत्कार दीया न उने बोलाया इसपर वह लोग कहने लगें कि हे राजन्! हम जानते है कि आप अपने पूर्वजो से चला आया पवित्र धर्म्म को छोड अर्थात् पूर्वजों की परम्परा पर लकीर फेर

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जैन धर्म्म को स्वीकार किया है आपने हीं नहीं पर आप के दादाजी (जयसेन राजा) भी परम्परा धर्म्म छोड जैनी बन गये पर आपके पिताजीने सत्य धर्म्म की सोध कर पुनः हमारा धर्म्म के अन्दर स्थिर हो उसका ही प्रचार किया है भलो आप को एसा ही करना था तो हम को वहां बुला के शास्त्रार्थ तो कराना था कि जिससे आप को ज्ञात हो जाता की कौनसा धर्म्म सत्य सदाचारी और प्राचीन है इत्यादि इसपर राजाने कहा कि मेरा दादाजीने और मैंनें जो किया वह ठीक सोच समझ के ही कीया है आपके धर्म्म की सत्यता और सदाचारमें अच्छी तरहसे जानता हुं कि जहां बेहन बेठी और माता के साथ व्यभिचार करने में भी धर्म्म माना गया है रूतुवंती से भोग करना तो तीर्थयात्रा जीतना पुन्य माना गया है धीकार है एसे धर्म्म और एसे दुराचारके चलाने वालो को में तो एसे मिथ्या धर्म्म का नाम कांनोमें सुनना में भी महान् पाप समझता हुं सरम है कि एसे अधर्म्म को धर्म्म मान-कर भी शास्त्रार्थका मिथ्या गमंड रखते हो क्या पवित्र जैनधर्म्म के सामने व्यभिचारी धर्म्म शास्त्रार्थ तो क्यापर एक शब्द भी उच्चा रण करनें को समर्थ हो सक्ता है अगर आप कों एसा ही आग्रह हो तों हमारे पूज्य गुरुवर्य्य शास्त्रार्थ करने को तय्यार है। गुस्से में भरे हुवे वाममार्गि बोले कि देरी किस की है हमतो इसी वास्ते आये है यह सुनते हो राजा अपने योग्य आदमियों कों सूरिजी के पास भेजे और शास्त्रार्थ के लिये आमन्त्रण कीया. आदमियोंने सूरिजी से सब हाल निवेदन कीया यह सुनते ही अपने शिष्य मण्डलसे सूरिजी महाराज राज सभा में पधार गये। नगर मे इस वात की खबर होते ही सभा एकदम चीकार बद्ध भरा गई। प्रारंभ मे ही उच स्वर से शैव बोल उठे कि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हे लोगों में आज आमतौर से जाहिर करताहुं कि जैन धर्म्म एक आधुनीक धर्म्म है पुन: वह नास्तिक धर्म्म है पुनः वह ईश्वर को नहीं मानते है इनके मन्दिरो मे नग्न देव है इत्यादि इसपर सूरिजी के पास बेठा हुवा वीरधवलोपाध्याय ने गभिर शब्दो में बडि योग्यता से बोला कि जैन धर्म्म आधूनिक नहीं परन्तु प्राचीन धर्म्म है जिस जैन धर्म के विषय में वेद साक्षि दे रहे है ब्रह्मा व्रिष्णु और महादेवने जैन धर्म्म को नमस्कार किया है पुरांणोवालोने भी जैन धर्म्म को परम पवित्र माना है (देखा पहला प्रकरण में जैन धर्म्म की प्राचीनता) ओर जैन धर्म्म नास्तिक भी नहीं है कारण जैन धर्म्म जीवाजीव पुन्य पाप आश्रव संवर निज्जैरा बन्ध और मोक्ष तथा लोकअलोक स्वर्ग नरक तथा सुकृत करणि के सुकृत्त फल दु:कृतकरणि का दुकृतफलकों मनाता है इत्यादि जैनास्तिक है नास्तिक वह ही कहा जा सकता है कि पुन्य पाप का फल व यह लोकपरलोक नमाने नास्तियों का यह लक्षण है कि वह व्यभिचार में धर्म्म बतलावें आगे ईश्वर के विषय में यह बतलाया गया था कि जैन ईश्वर कें बराबर मानते है जो सर्वज्ञ वीतराग परमब्रह्म ज्योती स्वरूप जिस्को संसारी जीवों के साथ कोइ भी संबंध नहीं है लीला क्रीडा रहित जन्म मृत्युयोनि अवतार लेना दि कार्यों से सर्वता मुक्त हो उसे जैन ईश्वर मानते है नकी बगलमे प्यारी को ले बेठा है हाथ में धनुष्य ले रखा है केइ यानि मे ही डेरा लगा रखा है केइ अश्वारूढ हो रहे है केइ पशुबलि में ही मग्न हो रहे है एसे एसे रागी द्वेषी विकारी निर्दय व्यभिचारीयों कें जैन कदापि ईश्वर नहीं मानते है जैनों के देव नग्न नहीं पर एक अलौकीकरूप सालंकृत दृश्य और शान्तिमय है इत्यादि विस्तार से उत्तर देने पर पाखण्डियों

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

का मुह श्याम और दान्त खटे हो गये हाहो कर रहस्ता पकडा वह अपने मठों में जाके विशेषशूद्रलोग जोकि विल्कूल अज्ञानी और मांसमदिरा के लोलपी थे उन्हकों अपनी झालमें फसा के जैसे तेसै उपदेश दे अपने उपासक बना रखा पर उन पाखण्डियों की पोल खुल जाना से राजा प्रज्या कि जैन धर्मपर ओर भी अधिक दृढ श्रद्धा हो गई उपसंहार में सूरिजीने कहा भव्यों ! हमे आपसे नतो कुच्छ लेना है न कोइ आप को धोखा देना है जनताकें सत्य रहस्ता बतलाना हम हमारा कर्त्तव्य समझ के ही उपदेश करते है जिसको अच्छा लगें वह स्वीकार करें । भगवात् महावीर के सदुपदेशद्वारा वहुत देशो में ज्ञानका प्रकाश से मिथ्यांधकार का नाश हो गया है हजारो लाखो निरापराधि जीवो की यज्ञमे होती हुइ बलिरूप मिथ्या रूढियो मूल से नष्ट हो गइ पर यह मरूभूमि इस अज्ञान दशा व्याप्त हो रही थी पर कल्याण हो आचार्य स्वयंप्रभसूरि का कि वह श्रीमाल भिन्नमाल तक अहिंसा का प्रचार कीया आज आप लोगों का भी अहोभाग्य है कि पवित्र जैन धर्म कों स्वीकार कर आत्म कल्यान करने को तत्पर हुवे हो इत्यादि—

राजा उपलदेवने नम्रतापूर्वक अर्ज करी कि हे प्रभो ! भगवान् महावीर और आचार्य स्वयंप्रभसूरि जो कुछ अहिंसा भत्तवती का झुंडा भूमि पर फरकाया वह महान् उपकार कर गये पर हमारे लिये तो आप ही महावीर आप ही आचार्य है की हमे मिथ्याझालसे छुडवा के सत्य रहस्ता पर लगाया इत्यादि जयध्वनी के साथ सभा विसर्जन हुई ॥

एक उपकेशपट्टनमें ही नहीं किन्तु आसपासमें जैसे जैसे जैन धर्मका प्रचार होता गया वैसे वैसे पाखण्डियां का

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्यात्व मार्ग लुप्त होता गया. राजा उपलदेव आदि सूरिजी कि हमेशो सेवा भक्ति करते हुवे व्याख्यान सुन रहे थे सूरिजीने तत्त्वमिमंसा तत्त्वसार मत्त परिक्षादि केइ ग्रन्थ भी निर्माण किये थे एक समय राजाने पुच्छा कि भगवान् यहां पाखंण्डियोंका चिरकालसे परिचय है स्यात् आपके पधार जानेके बाद फिरभी इनका दाव न लग जावे वास्ते आप एसा प्रबन्ध करावे की साधारण जनताकि श्रद्धा जैनधर्म्मपर मजबुत हो जावे ? सूरिजीने फरमाया कि इस के लिये दो रहस्ता है (१) जैनतत्त्वोंका ज्ञान होना (२) जैन मन्दिरोंका निर्माण होना। राजाने दोनों बातों को स्वीकार कर एक तरफ तो ज्ञानाभ्यास बडाना सरू कीया दूसरी तरफ लुणाद्री पहाडी के पास की पहाडी पर एक मन्दिर बनाना प्रारंभ करदीया। उसी नगरमें ऊहड मंत्री पहले से ही एक नारायणका मन्दिर बना रहा था पर वह दिनकों बनावे और रात्रिमें पुनः गिरजावे इससे तंगहो सूरिजीसे इसका कारण पुच्छा तों सूरिजीने कहा कि अगर यह मन्दिर भगवान महावीर के नाम से बनाया जाय, तो इसमे कोइ भी देव उपद्रव नहीं करेंगा—चतुर्मास के दिन नजदीक आ रहे थे राजाके मन्दिर तैयार होनेमें बहुत दिन लगनेका संभव था वास्ते मंत्री का मन्दिर को शीघ्रतासे तय्यार करवाया जाय कि वह प्रतिष्ठा सूरिजी के करकमलोसे हो इसवास्ते विशाल संख्यामे मजुर लगाके महावीर प्रभुका मन्दिर इतना शीघ्रतासे तय्यार करवायाकि वह स्वल्पकालमें ही तैयार होने लगा कारण कि बहुतसा काम तो पहले से ही तय्यार था, इधर संघने अर्ज करी कि भगवान मन्दिर तो तय्यार होनेमें है पर इस्मे बिराजमान होने योग्य मूर्त्तिकी जरूरत है ? सूरिजीनें कहा धर्यता रखों मूर्त्ति तय्यार हो रही है। इधर क्या हो रहा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

है कि उहडमंत्रीकी एक गाय जो अमृत सदृश दुद्धकी देने वालिथी वह लुणाद्री पहाडी के पास एक कैरका झाड था वहां जातेही उसके स्तनोंसे स्वयं ही दुद्ध वहां झर जाता वहां क्या था कि चमुंडादेवि गयाका दुद्ध और वेलुरेतिसे भगवान् महावीर प्रभुका बिंब (मूर्त्ति) तय्यार कर रहीथी पहला सूरिजी से देवीने अर्ज भी करदी थी तदानुस्सार सूरिजीने संघसे कहाथा की मूर्त्ति तय्यार हो रही है पर संघने पहला जैनमूर्त्तिका दर्शन न किया था वास्ते दर्शन की बडी आतुरता थी. पर सूरिजीने इस बातका भेद संघको नहीं दीया. इधर गायका दुद्धके अभाव मंत्रीश्वरने गवालियाको पुच्छा तो उसने कहा मैं इस बातको नहीं जानता हु कि गायका दुद्ध कमति क्यो होता है मंत्रीश्वरने पुनः पुनः उपालंभ देनेसे एकदिन गवाल गायके पीच्छे पीच्छे गया तो हमेशोंकी माफीक दुद्धको झरता देख मंत्रीको सब हाल कहा. दूसरे दिन खुद उहडमंत्री वहां गया सब हाल देखा और विचार किया कि यहांपर कोइ देव योग्य होना चाहिये गायको दूर कर जमीन खोदी तो वह क्या देखता है कि शान्तमुद्रा पद्मासनयुक्त वीतराग की मूर्त्ति दीख पडी मंत्रीश्वरने दर्शन फरसन कर बडा आनंद मनाया कि मेरेसे तो मेरी गाय हो बडी भाग्यशालनी है कि अपना दुद्धसे भगवान् का पक्षाल करा रही है खेर मंत्रीश्वर नगरमे आया राजा और अन्योन्य विद्धानेसे सब हाल कहा बस फिर देरी ही क्याथी बडे समरोह यानि गाजा बाजाके साथ संघ एकत्र हो सूरिजो महाराजके पास आये और अर्ज करी कि भगवान् आपकी कृपासे हमारा अहोभाग्य है कि हमने भगवान् के बिंबका दर्शन कीया और अब आप भी पधारेकी भगवान् को नगर प्रवेश करावे यह सब संघ भग-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वान् के दर्शनोका पिपासु हो रहा है इत्यादि? सूरिजीने सोचा की बिंब तय्यार होनेमें अभी सातदिनकी देरी है परन्तु दर्शनके लिए आतुर हुवा संघके उत्साहको रोकना भी तो उचित नही है, भवितव्यता पर विचार कर सूरिजी अपने शिष्य समुदायके साथ संघमे सामिल हो जहां भगवानकी मूर्त्ति थी वहां जा कर जमीनसे बिंब निकलवा कर नमस्कार पूर्वक हस्तीपरारूढ करवा के धामधूम पूर्वक भगवान्का नगर प्रवेश करवाया संघमे बडाही आनंद मंगल और घरघर उत्सव बधामणा हुवा कारण पहला उन लौगोंने हिंसक और विकारी देवि देवतों की मूर्त्तियोको देखी थी पर आज भगवान् की शान्त मुद्रा निर्विकार किसी प्रकारकी चेष्टा रहित पद्मासन मूर्त्ति देख लोगोंकी जैनधर्म्मपर और भी दृढ श्रद्धा होगई। ऊहड-मंत्रीका बनाया हुवा महावीर मन्दिरके एक विभागमे भगवान् को बिराजमान किया. यहांपर एक विशेष बात यह हुई कि देविने मूर्त्तिको सर्वांग सुन्दर बनाना प्रारंभ कियाथा अगर सात दिन और देर कि गइ होती तो देविकी मनसा मुताबीक कार्य्य हो जाता पर आतुरता करनेसे भगवान् के हृदय पर निंबुफल जींतनी गांठो (स्तनाकार) रह गइ इससे देवि नाराज हुई पर सूरिजी साथमें थे वास्ते उसका कोइ जोर न चला " भवितव्यता बलवान् है "

इधर आश्विन मासकि नौरात्री नजदीक आने लगी तब संघाग्रेसर लोगोने सूरिजी से अर्ज करी कि हे प्रभो! आप तो हमे कहते हो कि बगरह अपराध किसी जीवोंको तकलीफ नहीं देना पर हमारे यहां चमुंडादेवि एसी निर्दय है कि इस नौरात्रोमे प्रत्येक घरसे एकेक भैसा और प्रत्येक मनुष्यसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

एकेक बकारा कि बलि लेती है अगर एसा न किया जाय तो वह यहांतक उपद्रव करेगा की हमे हमारा जीवनमे भी शंसय है। " पुनराचार्यैः प्रोक्तं अहं रक्षां करिस्यामि " हे भव्यों तुम गवरावो मत में तुमारी रक्षा करूगा. जो सत्य ही देवि देव है वह मांस मदिरादि घृणित पदार्थ कभी नही इच्छेगे अगर कोई व्यान्तरादि देव कतूहल के मारे एसे करते हीं होगे तो में उसे उपदेश करूगा हे भव्यों यह देवि देवताओं का भक्ष नहीं है पर कितने ही पाखण्डि लोग मांस भक्षण के हेतु देवि देवताओके नामसे एसी अत्याचार प्रवृति को चला दी है जिस पदार्थोंसे अच्छे मनुष्यों को भी घृणा होती है तो वह देव देवि कैसे स्वीकार करेगे अगर तुम को धैर्य नहीं हो तो लड्डु चुरमा लापसी खाजा नालियेर गुलराबादि शुद्ध सुगंधित पदार्थोंसे देवि की पूजा कर सकते हो इत्यादि उपदेश श्रवण कर संघने अपने अपने घरों मे वह ही शुद्ध पदार्थ तय्यार करवा के सूरिजीसे अर्ज करी कि आप हमारे साथ मे चलो कारण हम को देवि का वडा भारा भय है इस पर सूरिजी भी अपने शिष्य मण्डलसे संघ के साथ देवि के मन्दिर मे गये. गृहस्थ लोगोंने वह पूजापा नैवेद्य वगैरह देवि के आगे रखा जिन को देख देवि एकदम कोपायमान हो गइ इधर दृष्टिपात्त किया तो सूरिजी दीख पडे बस देवि का गुस्सा मन का मन मे ही रह गया तद्यपि देवि, सूरिजी से कहने लगी वहां महाराज आपने ठीक किया मेने ही आप को विनंति कर यहां पर रखा और मेरे ही पेट पर आपने पग दीया क्या कलिकाल कि छाया आप जैसे महात्माओ पर ही पड गई है मेने पहले ही आपसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

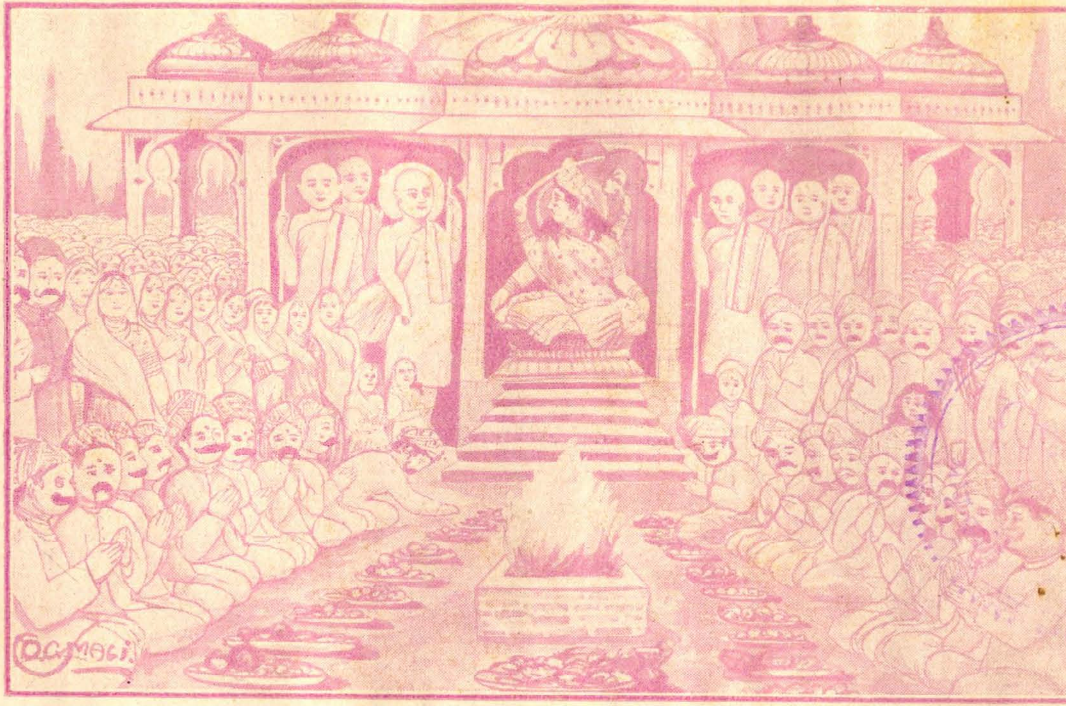

भयकंपित नूतन श्रावकोने नैवेद्यादि थालसहित, आचार्य श्री को साथ ले, देवी समक्ष हुए क्रोधित नेत्रोंसे साक्षत आचार्य महाराज को देखा साक्षत और अपना मांस मदिरा छुडाने वाले आचार्य देवसे बदला लेनेकी ठान ली। (पृ ८२)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्ज करी थी कि आप राजा प्रजा को जैनी तो बनाते हो पर मेरे कडडका मरडका मत छोडाना ? पर आपने तो ठीक ही करा इत्यादि देवि का वचना सुन सूरिजी महा-राजने कहा देवि यह नलयेर तो तेरा कडडका है और गुलराब तेरा मरडका है इस को स्वीकार क्यो नहीं करती हा भो देवि पूर्व जन्म में तो तुमने अच्छा सुकृत कीया बहुत जीवों को जीतब दान दीया तब तुमे देव योनि मीली है पर यहां पर यह घोर हिंसा करवा के तुम किस योनि में जाना चाहाती हो हे देवि अच्छा मनुष्य भी कुतूहल के लिये निर-र्थक हिंसा करना नहीं चाहाता है तो तुम ज्ञानवान् देवि होके फक्त कतूहल के मारी हजारो जीवो के प्राणो पर छुरा चलवाना क्यों पसंद कीया है इत्यादि उपदेश देने पर देवि उस वख्त तो शान्त हो गई पर गृहस्थ वर्ग घबरा रहे थे सूरि-जीने उन पर वासक्षेप कर विसर्ज्जन कीये पर देवि सर्वता शान्त नहीं हुई थी. अज्ञान के वस हो यह रहा देख रही थी कि कभी आचार्यश्री प्रमाद मे हो तो मैं मेरा बदला लु।

" एकदा छलं लब्ध्या देव्या आचार्यस्य कालवेलायां किंचित् स्वद्यायादि रहितस्य वामनैत्रे भ्रूराधिष्टिता वेदना जातः "

आचार्यश्री सदैव अप्रमत्तपने ही रहते थे पर एकदा अकाल मे स्वद्याय ध्यान रहित होने से देविने आपश्री के वामा नेत्र में वेदना कर दी वह भी एसी कि कायर मनुष्य उसे सहन भी नहीं कर सके पर सूरिजी को तो उस की परवा ही नहीं थी उन्होने तो अपने दुष्ट कर्मों का देना चुकाने की दुकान ही खोल रखी थी तत्पश्चात् देवि अपना असली रूप कर आचार्य श्री के पास आ के कहने लगी कि भो आचार्य मैं चमुंडा

देवि हुँ आपने मेरा करडका मरडका छोडाया जिस्का यह फल है सूरिजीने कहा कि इस फल से तो मुझे नुकशांन नहीं फायदा है पर तुँ तेरा दील में विचार कर कि उस करडका मरडका का भविष्य में तुमे क्या फल मिलेगा पूर्वो-पार्जित पुन्य से तो यहां देव योनि पाई है पर पशु हिंसा करवा के तीर्यंच हो नरक मे जाना पडेगा. उस समय चक्रे-श्वरी आदि देवियों सूरिजी के दर्शनार्थी आइ थी चमुंडा और सूरिजी का संवाद देख चमुंडा को एसे उच्च स्वर से ललकारी देवि लज्जित हो अपनि वेदना को वापिस खांच सूरिजी के चरणाविंद में वन्दन नमस्कार कर अपने अज्ञा-नता से किया हुवा अपराध की माफि मांगी वहां पर बहुत से लोग एकत्र हो गये थे श्री सच्चिका देवी सर्व लोक प्रत्यक्ष श्री रत्नप्रभाचार्यैः प्रतिबोधिता "श्री उपकेशपुरस्था श्री महावीर भक्ता कृता सम्यक्त्व धरिणी संजाता आस्तां मांसं कुशममपि रक्तं नेच्छति कुमारिका शरीरे अवतीर्ण सती इति वक्ति भो मम सेवका अत्र उपकेशस्थं स्वयंभू महावीर. बिंबं पूजयति श्री रत्नप्रभाचार्यं उपसेविर्ति भगवा न् शिष्य प्रशिष्य व सेवति तस्याहं तोषंगच्छति। तस्य दुरितं दलयामि यस्य पूजा चित्ते धारयामि" सब लोगों के सामने सच्चिका देवि " अर्थात् चमुंडा देविने पहला सूरिजी को वचन दीया था कि आप के यहां विराज-नासे बहुत उपकार होगा वह वचन सत्य कर बताने से सूरिजीने चमुंडा का नाम सच्चिका रखा था " को आचार्य रत्नप्रभसूरिने प्रतिबोध दे भगवान् महावीर के मन्दिर की अधिष्टायिक स्थापन करी तब से देवि मांस मदिर छोड

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सम्यक्त्व धारिणि हुई मांस तो क्या पर देवीने एसी प्रतिज्ञा कर कह दीया कि आज से मेरे रक्त वर्ण का पुष्प तक भी नहीं छडेगा. और मेरे भक्त जो उपकेशपुर में महावीर के बिंब की पूजा करते रेहगें आचार्य रत्नप्रभसूरि और इन की संतान की सेवा उपासन करते रहेगें उन के दुःख संकट को में निवारण करूगी और विशेष काम पडने पर मुझे जो आराधन करेगा तो मैं कुमारी कन्या के शरीर मे अवतीर्ण हो आउगी इत्यादि देवी के वचन सुन और भी " श्री सच्चिका देव्या वचनात् क्रमेण श्रुत्व प्रचुरा जनाः श्रावकत्वं प्रतिपन्नाः " बहुत से लोग जैन धर्म्म को स्वीकार श्रावक बन गये और जैन धर्म्म का बडा भारी उद्योत हुवा.

उपकेश पट्टन में भगवान् महावीर प्रभु का सिखर बद्ध मंदिर तय्यार हो गया तत्पश्चात् प्रतिष्टा का मुहूर्त मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमि गुरुवार को निश्चित हुवा सब सामग्री तैयार हो रहीथी इधर रत्नप्रभसूरि की आज्ञा से ४६५ मुनि विहार किया था उन से कनकप्रभादि कितनेक मुनि कोरंटपुर (कोला पट्टन) में चतुर्मास किया था आपश्री के उपदेश से वहां के श्रावक वर्गने भगवान् महावीर का नवीन मन्दिर बनवाया जिस्के प्रतिष्ठा का महुर्त भी मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमि का था तब कोरंट संघ एकत्र हो आचार्य रत्नप्रभसूरि को आमन्त्रण करने को आये " तेनावसरे कोरंटकस्य श्राद्धानां आह्वानं आगतं " अर्ज्ज करने पर सूरिजीने कहा कि इस टेम पर यहां भी प्रतिष्टा है वास्ते तुम वहां पर रहे हुवे कनकप्रभादि मुनियों से प्रतिष्ठा करवा लेना. इसपर कोरंट

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

संघ दिलगीर हो कहा कि भगवान् हम आपके गुरुमहाराज स्वयंप्रभसूरि के प्रतिबोधित श्रावक है और उपकेश पुर के श्रावक आपके प्रतिबोधित है वास्ते इन पर आपका राग है खेर आपकी मरजी इसपर आचार्यश्रीने कहा " गुरुणा कथितं मुहूर्त बेलायां गच्छामि " श्रावको तुम अपना कार्य करो में मुहूर्तपर आ जाउगा, श्रावक जयध्वनि के साथ वन्दना कर विसर्जन हुवे इधर उपकेशपुर में प्रतिष्टा महोत्सव बडे ही धामधूम से हो गया पूजा प्रभावना स्वामिवात्सल्यादि से धर्म्म की बडा भारीउन्नति हुइ । आचार्यश्रीने " निजरूपेण उपकशे प्रतिष्ठा कृता वेक्रयरूपेण कोरंट के प्रतिष्ठाकृता श्राद्धैः द्रव्यव्यय कृतः " यहतो पहला से ही पढ चुके है कि आचार्य रत्नप्रभसूरि अनेक विद्याओं के पारगामी थे आप निज रूपसे तो उपकेशपुर मे और वैक्रय रुप से कोरंटपुर में प्रतिष्टा एक ही मुहूर्त में करवादी उन दोनो प्रतिष्टा महोत्सव में श्रावकोने वहुत द्रव्य खरच किया था तत्पश्चात् कोरंट संघ को यह खबर हुई कि आचार्य रत्नप्रभसूरि निज रूपसे उपकेशपूर प्रतिष्टा कराइ और यह तो वैक्रयरूपसे आये थे इसपर संघ नाराज हो कनकप्रभ मुनि कों उस की इच्छा के न होने पर भी आचार्य पद से भूषीत कर आचार्य बना दीया इसका फल यह हुवा कि उधर श्रीमाल पोरवाड लोगों का आचार्य कनकप्रभसूरि और इधर उपकेश वंश के श्रावको के आचार्य रत्नप्रभसूरि हो गये इन दोनो नगरो के नामसे दो साखा हो गई उन साखाओ के नाम से ही उपकेश गच्छऔर कोरंटगच्छ कि स्थापना हुईथी वह आज पर्यन्त मोजुद है इन दोनों मन्दिरोंका प्रतिष्टा का समय में निम्न लिखित श्लोक पट्टावलि मे है.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सप्तत्या (७०) वत्सराणं चरम जिनपतेर्मुक्त जातस्य वर्षे.
पंचम्यां शुक्ल पक्षे सुर गुरु दिवसे ब्राह्मण सन्मुहूर्ते ।
रत्नाचार्यैः सकल गुणयुक्तैः सर्व संघानुज्ञातैः
श्रीमद्वीरस्य बिंबे भव शत मथने निर्मितेयं प्रतिष्टाः ।१।
उपकेशे च कोरंटे तूल्यं श्रीवीरबिंबयोः
प्रतिष्टा निर्मिता शक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।१।

कोरंट गच्छ में भी बडे बडे विद्वानाचार्य हो गये थे जिनके कर कमलो से कराइ हुइ हजारो प्रतिष्टा का लेख मीलते है वर्तमान शिलालेखों मे भी कोरंट गच्छाचार्यों के बहुत शिलालेख इस समय मोजुद है वह मुद्रित भी हो चुके है समय की बलिहारी है जिस गच्छ मे हजारो की संख्या मे मुनिगण भूमिपर विहार करते थे वहां आज एक भी नहीं वि. सं. १९१४ तक कोरंट गच्छ के श्री अजीतसिंहसूरि नाम के श्री पूज्य थे वह बीकानर भी आये थे लंगोट के बडे ही सचे और भारी चमत्कारी थे अब तो सिर्फ कोरंट गच्छीय महात्माओं कि पोसालों रह गइ है और वह कोरंट गच्छ के श्रावकों की वंसावलियों लिखते है तथपि जैन समाज कोरंट कि आभारी है और उस गच्छ का नाम आज भी अमर है ।।।

आचार्य रत्नप्रभसूरि उपकेश पटन मे भगवान् महावीर प्रभु के मंदीर की प्रतिष्टा करने के बाद कुच्छ रोज वहां पर विराजमान रहै श्रावक वर्ग कों पूजा प्रभावना स्वामिवात्सल्य सामायिक प्रतिक्रमण व्रत प्रत्याख्यानादि सब क्रिया प्रवृतियों का अभ्यास करवा दीया था.

आचार्यरत्नप्रभसूरिने यह सुना था कि मेरे वैक्रय रूप

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

से कोरंटपुर जाना से वहां का संघ में मेरे प्रति अभाव हो कनकप्रभ को आचार्य पद स्थापन कीया है वास्ते पहला मुजे वहां जाके उनको शान्त करना जरूरी है कारण गृहक्लेश शासन सेवा मे बाधाए डालनेवाला होता है इस विचार से आप उपकेशपुर से विहार कर सिधे ही कोरंट पुर पधारे आचार्य कनकप्रभसूरि को खबर होनेपर वह बहुत दूर तक संघ को ले कर सामने आये बडे ही महोत्सवपूर्वक नगर प्रवेश कीया भगवान् महावीर की यात्रा करी तत्पश्चात् दोनों आचार्य एक पाट पर विराजमान हो देशनादि और प्रतिष्टा-पर आप वैक्रय रूपसे आने का कारण बतलाया कि तुमतो हमारे गुरु महाराज के प्रतिबोधित पुरांणे श्रावक श्रद्धासंपन्न हो पर वहां के श्रावक बिलकुल नये थे जैन धर्मपर उन की श्रद्धामजबुत करणिथी इत्यादि मधुर बचनों से कोरंट संघ को संतुष्ट कर दीया और आपने कनकप्रभसूरि कों आचार्य पद दीया यह भी ठीक ही किया है कारण प्रत्येक प्रान्त में एकेक योग्याचार्य होने की इस जमाना में जरूरी है इतने मे कनकप्रभ-सूरिने अर्ज करी कि हे भगवान्। मैं तों इस कार्य में खुशी नहीं था पर यहां के संघमे अधैर्यता देख संघ बचन कों अनेच्छा स्वीकार करना पडा था आप तो हमारे गुरु है यह आचार्यपद आपश्री के चरणकमलों मे अर्पण है इसपर आचार्य रत्नप्रभसूरि संघ समक्ष कनकप्रभसूरि पर वासक्षेप डाल के आचार्य पद कि विशेषता करदी इस एकदीली को देख संघमे बडा आनंद मंगल छा गया बाद जयध्वनी के साथ सभा विसर्ज्जन हुई बाद रत्नप्रभसूरि कनकप्रभसूरिने अपने योग्य मुनिवरों से कहा की भविष्यकाल महा भयंकार आवेगा जैन धर्म्म का कठिन नियम संसार लुब्ध जीवों को पालन करना मुश्किल

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

होगा वास्ते जातिधर्म्म बना देना बहुत लाभकारी होगा इस वास्ते सब साधुओ कों कम्मर कस के अन्य लोगों को प्रतिबोध दे दे कर इस जातियों की वृद्धि करना बहुत जरूरी बात है इत्यादि वार्तालाप के बाद कनकप्रभसुरि की तों उपकेशपट्टन की तरफ विहार करने कि आज्ञा दी कनकप्रभसूरिने उपकेशपट्टन पधार के उपलदेवराजा के बनाये हुवे पार्श्वनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाइ इत्यादि अनेक शुभ कार्य्य आपके उपदेश से हुवे और सूरिजीने आप उसी प्रान्त मे व अन्य प्रान्तो मे विहार करने का निर्णय कीया। रत्नप्रभ सूरिने फिर अपने १४ वर्ष के जीवन मे हजारो लाखो नये जैन बनाये जिस्मे पोरवाडो से संबन्ध रखनेवालों को पोरवाडो मे मीला दीया श्रीमालो से सम्बन्ध रखनेवालो को श्रीमालो मे और उपकेश वंस से तालुक रखनेवालों को उपकेश वंश मे मीलाते गये उपकेशपुर के गौत्रो के सिवाय (१) चरड गोत्र (२) सुघड गोत्र (३) लुग गोत्र (४) गटिया गौत्र एवं चार गौत्रोंकी और स्थापना करी आपश्रींने अपने करकमलोसे हजारो जैन मूर्त्तियोकी प्रतिष्टा और २१ वार श्रीसिद्धगिरि का संघ तथा अन्यभी शासनसेवा और धर्म्म का उद्योत कीया आपश्रीने करीबन् १० लक्ष नये जैन बनाये थे. पट्टावलिमें लिखा है कि देविने महाविदह क्षेत्रमें श्री सीमंधर स्वामिसे निर्णय कीया था कि रत्नप्रभसूरिका नाम चौरासी चौवीसी मे रहेगा एक भवकर मोक्ष जावेगा इत्यादि...जैन कोम आचार्यश्री के उपकारकी पूर्ण ऋणि है आपश्रीके नाम मात्रसे दुनियोंका भला होता है पर खेद इस वात का है कि कीतनेक कृतघ्नी एसे अज्ञ ओसवाल है कि कुमति के कदागृहमें पडके एसे महान् उपकारी गुरुवर्य्य के नामतक को भुल बैठे है ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यह तो पहले पढ चुके है कि आचार्य श्री के पास वीरधवल नामके उपाध्याय अच्छे विद्वान थे एक समय राजग्रह नगरमें किसी यक्षने बडा भारी उपद्रव मचा रखाथा जिसके जरिये जैनतो क्यापर सब नागरिक लोक दुःखी हो रहेथे बहुत उपचार किया पर उपद्रव शान्त नहीं हुवा इसपर संघने रत्नप्रभसूरिकि तलास कराइ तो आपका विहार मरूभूमिकी तरफ हो रहाथा तब राजगृहका संघ आचार्यश्री के पास आया और वहांका सब हाल अर्जकर उधर पधारनेकी विनंति करी सूरिजीने अपनी सलेखनाध्यायन आदि केइ कारणों से आपने अपने शिष्य वीरधवल उपाध्यायको आज्ञा दी कि हमारा वासक्षेप लेके वहां जावों और संघका संकटको दूर करो तदानुसार उपाध्यायजी क्रमशः, विहार कर राजगृह पहुँचे रात्रीमे आपने स्मशानभूमि मे ध्यान लगा दीया रात्रीमे यक्ष आया पहला तो उपाध्यायजीसे दूर रह बहुतसे उपसर्गका ढोंग बतलाया पर आपके तपतेजसे व उपदेश से वह शान्त हो उपाध्यायजीसे अर्ज करीं कि इस नगरीके लोगोंने मेरी बहुत आशातना करी है उपाध्यायजीने उसे उपदेशद्वारा शान्त करदीया पर उसने कहा कि मैं आपकी आज्ञा सिरोद्धार करता हु पर मेरा नाम कुच्छ न कुच्छ रहना चाहिये. उपाध्यायजीने स्वीकार करलिया बस । सब उपद्रव शान्त हो गया संघमे और नगरमे आनंद मंगल और जैनधर्मकी जयध्वनि होने लग गई उपाध्यायजीने कीतनेहो काल तो उसी प्रान्तमे विहार कर पवित्र तीर्थोंकी यात्रा करी पुनः सूरिजी महाराजकि सेवामे आये और वहाँका सब हाल कह सुनाया यक्षका नाम रखनेके लिये वीरधवल उपाध्यायको अपने पद पर आचार्यपद स्थापन कर उसका नाम यक्षदेवसूरिरखदीया तत्पश्चात् आचार्य रत्नप्रभ-

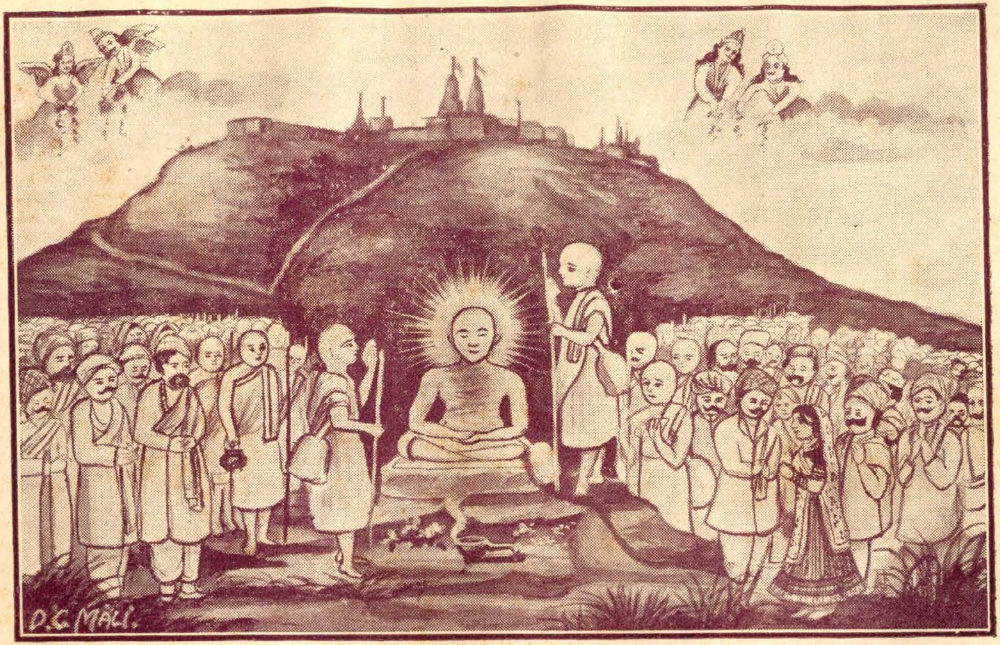

अंतिम अवस्था जान, तरण तारण सिद्धक्षेत्रकी तलेटीमें असंख्य मुनि व श्रावक श्राविकादि संघकी उपस्थितिमें अनशन कर, अपने जर्जरित देहको छोड आचार्य श्री रत्नप्रभसूरीश्वरने समाधिपूर्वक स्वर्गको प्रस्थान कीया.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूरि सलेखना करते हुवे पवित्रतीर्थ सिद्धाचल पर पधार गये वहां एक मासका अनसन कर समाधि पूर्वक नमस्कार महामंत्र का ध्यान करते हुवे नाशमान शरीर का त्यागकर आप बारहवे स्वर्गमें जाके विराजमान होगये जिस समय आचार्य श्री सिद्धाचलपर अनसन कीया था उसरोंजसे अन्तिम तक करीबन ५००००० श्रावक श्राविका सिवाय विद्याधर और अनेक देवि देवता वहां उपस्थित थे आपश्रीका अग्निसंस्कार होने के बाद अस्थि और रक्षा भस्मी मनुष्योंने पवित्र समझ आपश्रीकी स्मृतिके लिये ले गयेथे आपके संस्कार के स्थानपर एक वडा भारी विशाल स्थुभभी श्री संघने कराया था जिस्मे लाखों द्रव्य संघने खरच कीयाथा पर कालके प्रभावसे इस समय वह स्थुभ नहीं है तो भी आपश्रीकी स्मृतिके चिन्ह आजभी वहां मोजुद है विमलवसीमे आपश्री के चरण पादुका अभी भी है इस रत्नप्रभसूरि रूप रत्न खोदनेसे उस समय संघका महान् दुःख हुवाथा भविष्यका आधार आचार्य यक्षदेवसूरि पर रख पवित्र गिरिराजकी यात्रा कर सब लाग वहांसे विदाहो आचार्य श्री यक्षदेवसूरिके साथ में यात्रा करते हुवे अपने अपने नगर गये और आचार्य यक्षदेवसूरि अपने पूर्वजोके बनाये हुवे जैन जातिका उपदेशरूपी अमृतधारा से पोषण करते हुवे फीरभी नये जैन बनाते हुवे उसमे वृद्धि करने लगे ॐ शान्ति यह भगवान् पार्श्वनाथका छठ्ठा पाट आचार्य रत्नप्रभसूरि अपनी चौरासी वर्षकी आयुष्य पूर्ण कर वीरात् चौरासी वर्षे निर्वाण हुवे यह महा प्रभाविक आचार्य हुवे इति ।

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

भगवान् पार्श्वनाथके पाटानुपाट.

---

१ गणधर श्रीशुभदत्ताचार्य.
२ आचार्य हरिदत्तसूरि.
३ आचार्य आर्य्यसमुद्रसूरि.
४ आचार्य केशीश्रमण.
५ आचार्य स्वयंप्रभसूरि.
६ आचार्य रत्नप्रभसूरि.

इन छै आचार्योंका संक्षिप्त जीवन उपरकी पट्टावलीमें आ गया है शेष आचार्योंका जीवन आगेके प्रकरणमें लिखा जावेंगे यहां पर तो केवल शुभ नामावली ही दिजाती है।

७ श्रीयक्षदेवसूरिः
८ ,, कक्कसूरिः
९ ,, देवगुप्तसूरिः
१० ,, सिद्धसूरिः
११ ,, रत्नप्रभसूरिः
१२ ,, यक्षदेवसूरिः
१३ ,, कक्कसूरिः
१४ ,, देवगुप्तसूरिः
१५ ,, सिद्धसूरिः
१६ ,, रत्नप्रभसूरिः
१७ ,, यक्षदेवसूरिः
१८ ,, कक्कसूरिः
१९ ,, देवगुप्तसूरिः
२० ,, सिद्धसूरिः
२१ ,, रत्नप्रभसूरिः
२२ ,, यक्षदेवसूरिः
२३ ,, कक्कसूरिः
२४ ,, देवगुप्तसूरिः
२५ ,, सिद्धसूरिः
२६ ,, रत्नप्रभसूरिः

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२७ ,, यक्षदेवसूरिः
२८ ,, कक्कसूरिः
२९ ,, देवगुप्तसूरिः
३० ,, सिद्धसूरिः
३१ ,, रत्नप्रभसूरिः
३२ ,, यक्षदेवसूरिः
३३ ,, कक्कसूरिः
३४ ,, देवगुप्तसूरिः
३५ ,, सिद्धसूरिः*
३६ ,, कक्कसूरिः

* इन आचार्यके बाद श्रीरत्नप्रभसूरिः और यक्षदेवसूरि इन दोनों नामोंको भण्डार कर शेष तीन नामसेही परम्परा चली है।

३७ ,, देवगुप्तसूरिः
३८ ,, सिद्धसूरिः
३९ ,, कक्कसूरिः
४० ,, देवगुप्तसूरिः
४१ ,, सिद्धसूरिः
४२ ,, कक्कसूरिः
४३ ,, देवगुप्तसूरिः
४४ ,, सिद्धसूरिः
४५ ,, कक्कसूरिः
४६ ,, देवगुप्तसूरिः
४७ ,, सिद्धसूरिः
४८ ,, कक्कसूरिः
४९ ,, देवगुप्तसूरिः
५० ,, सिद्धसूरिः
५१ ,, कक्कसूरिः
५२ ,, देवगुप्तसूरिः
५३ ,, सिद्धसूरिः
५४ ,, कक्कसूरिः
५५ ,, देवगुप्तसूरिः
५६ ,, सिद्धसूरिः
५७ ,, कक्कसूरिः
५८ ,, देवगुप्तसूरिः
५९ ,, सिद्धसूरिः
६० ,, कक्कसूरिः
६१ ,, देवगुप्तसूरिः
६२ ,, सिद्धसूरिः
६३ ,, कक्कसूरिः
६४ ,, देवगुप्तसूरिः

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

६५ ,, सिद्धसूरिः
६६ ,, कक्कसूरिः
६७ ,, देवगुप्तसूरिः
६८ ,, सिद्धसूरिः
६९ ,, कक्कसूरिः
७० ,, देवगुप्तसूरिः
७१ ,, सिद्धसूरिः
७२ ,, कक्कसूरिः
७३ ,, देवगुप्तसूरिः
७४ ,, सिद्धसूरिः
७५ ,, कक्कसूरिः
७६ ,, देवगुप्तसूरिः
७७ ,, सिद्धसूरिः
७८ ,, कक्कसूरिः
७९ ,, देवगुप्तसूरिः
८० ,, सिद्धसूरिः
८१ ,, कक्कसूरिः
८२ ,, देवगुप्तसूरिः
८३ ,, सिद्धसूरिः
८४ ,, ...

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com